सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023
www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 158, नई दिल्ली, शनिवार 16 अगस्त 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8
देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

03 जीएसटी रिफॉर्म कि प्रधानमंत्री की घोषणा पर व्यापारियों ने किया स्वागत
06 राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और स्वतंत्रता आंदोलन
08 भारत का सबसे बड़ा विमान मरम्मत केंद्र भुवनेश्वर में स्थापित किया जाएगा

स्वास्थ्य का अधिकार और अपमानजनक व्यवहार या दंड से मुक्ति

"टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत" के साथ जुड़े

पिंकी कुंडू सह संपादक परिवहन विशेष

स्वास्थ्य का अधिकार एक सार्वभौमिक मानव अधिकार है जो प्रत्येक व्यक्ति को सर्वोत्तम शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य प्राप्त करने का अवसर देता है।

समय पर और सस्ती स्वास्थ्य सेवाएं, स्वच्छ पेयजल, पर्याप्त पोषण, स्वच्छ वायु, उचित स्वच्छता, सुरक्षित कार्य परिस्थितियां और आवश्यक दवाओं की उपलब्धता शामिल है।

स्वास्थ्य केवल शारीरिक रोग होने का नाम नहीं है बल्कि पूर्ण शारीरिक, मानसिक और सामाजिक कल्याण की स्थिति है। जिसे बिना किसी भेदभाव के सुनिश्चित करना सरकार की जिम्मेदारी है।

अपमानजनक व्यवहार या दंड से मुक्ति भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। किसी भी व्यक्ति के साथ अस्पताल, जेल, कार्यस्थल या किसी भी सार्वजनिक/निजी स्थान पर अपमान, उपेक्षा या क्रूर व्यवहार नहीं होना चाहिए। स्वास्थ्य सेवाओं से वंचित करना, असुरक्षित इलाज, या अमानवीय परिस्थितियों में रहने के लिए मजबूर करना अपमानजनक व्यवहार की श्रेणी में आता है। यह अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार मानकों का उल्लंघन तो है ही साथ ही नैतिक दृष्टि से भी गलत है।

अधिकार यह सुनिश्चित करते हैं कि स्वास्थ्य सेवाएं करुणा, समानता और गरिमा के साथ दी जाएं।

स्वस्थ और सम्मानजनक जीवन हर व्यक्ति का अधिकार है, जिसे किसी भी कीमत पर छीना नहीं जा सकता।

अगर आप को कहीं ऐसे लगता हैं की आपके या अन्य किसी को इस अधिकार से वंचित किया जा रहा है और आप इस में उसके सहायक बनना चाहते हैं तो **"टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत"** के साथ जुड़े यह ट्रस्ट आपको इसके खिलाफ खड़े होने में पूर्ण समर्थन और सहयोग प्रदान करेगा।

आर.सी.एस.एस. ड्राईवर सेवा एसोसिएशन म.प्र. द्वारा सरकार और प्रशासन को सौंपा गया मांग पत्र

परिवहन विशेष न्यूज

ड्राइवरों के मौलिक अधिकारों की रक्षा, आरटीओ विभाग द्वारा अनावश्यक प्रताड़ना की रोकथाम एवं राष्ट्रवादी चालक सेवा संगठन को ट्रैफिक व्यवस्था और नशा-निरोध हेतु परिवहन विभाग के साथ निशुल्क सहयोग करने की अनुमति प्रदान करने के संबंध में

ड्राइवरों के मौलिक अधिकारों की रक्षा, आरटीओ विभाग द्वारा अनावश्यक प्रताड़ना की रोकथाम एवं राष्ट्रवादी चालक सेवा संगठन को ट्रैफिक व्यवस्था और नशा-निरोध हेतु परिवहन विभाग के साथ निशुल्क सहयोग करने की अनुमति प्रदान करने के संबंध मे आर.सी.एस.एस. ड्राईवर सेवा एसोसिएशन म.प्र. के अंतर्गत पंजीकृत लीगल मेंबरों को जबलपुर आरटीओ विभाग के कुछ अधिकारियों द्वारा एंट्री, चालान, धमकाने एवं अन्य प्रकार की प्रताड़ना का सामना करना पड़ रहा है। यह न केवल मौलिक अधिकारों का हनन है, बल्कि ड्राइवर समुदाय के सम्मान और आजीविका पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। हमारा निवेदन है कि,

1. संगठन के पंजीकृत लीगल मेंबर, जिनके पास संस्था का वैध आई-कार्ड है, उन्हें आरटीओ विभाग द्वारा निशुल्क आवागमन की अनुमति दी जाए।

2. ऐसे मेंबरों पर किसी भी प्रकार का मानसिक, शारीरिक या प्रशासनिक दबाव न डाला जाए।

3. जबलपुर आरटीओ कार्यालय में होने वाली अनावश्यक बहस, दुर्व्यवहार एवं अनुचित कार्यवाहियों पर तुरंत रोक लगाई जाए।

4. राष्ट्रवादी चालक सेवा संगठन को ट्रैफिक व्यवस्था सुधारने और नशे की रोकथाम के लिए परिवहन विभाग के साथ निशुल्क सहयोग करने की अनुमति प्रदान की जाए, जिससे चालक समाज सुरक्षित एवं जागरूक रहे और ट्रैफिक नियमों का उल्लंघन न हो।

श्रीमान निवेदन यह है की ट्रैफिक की व्यवस्था और नशे की रोकथाम के लिए राष्ट्रवादी चालक सेवा संगठन को परिवहन विभाग के साथ सहकार कार्य करने की अनुमति दी जाए जिसमें राष्ट्रवादी चालक सेवा संगठन सहकार रुप में परिवहन विभाग के साथ कार्य करेगा जिससे चालक समाज सुरक्षित रहेगा और जागरूकता बनी रहेगी जिसमें ट्रैफिक नियमों का भी उल्लंघन नहीं होगा तत्काल संज्ञान लेकर आवश्यक कार्यवाही करने की कृपा करें, ताकि ड्राइवर समुदाय सम्मानपूर्वक और सुरक्षित रूप से अपना कार्य कर सके।

हमें पूर्ण विश्वास है कि आप इस विषय पर योग्य संज्ञान लेकर हमें आवश्यक सहयोग प्रदान करेंगे।

सारथी एकता मिशन सफलता के लिए एकता जरूरी

देश की पहली बिना ड्राइवर के चलने वाली मिनी बस हैदराबाद में शुरू

परिवहन विशेष न्यूज

देश की पहली चालक रहित मिनी बस हैदराबाद पहुंच गई हैं. इसके साथ ही एक नए भविष्य का आगाज हो गया है. हालांकि इन वाहनों को अभी जनता के लिए नहीं खोला गया है. फिलहाल इनको विशेष रूप से आईआईटी हैदराबाद परिसर के भीतर ही संचालित किया जा रहा है.

आईआईटी हैदराबाद द्वारा विकसित ऑटोनॉमस नेविगेशन डेटा एक्विजिशन सिस्टम तकनीक से संचालित ये बसें पिछले तीन दिनों से संस्थान परिसर में प्रतिदिन चल रही हैं. कर्मचारियों के अनुसार, यह भारत में पहली बार है कि चालक रहित बसों को कार्यात्मक क्षमता में तैनात किया गया है.

बिजली से संचालित

इन स्वचालित बसों के लिए

टेक्नालाजी का विकास आईआईटी हैदराबाद की विशेष अनुसंधान इकाई, टेक्नोलॉजी इनोवेशन हब ऑन ऑटोनॉमस नेविगेशन (TIHAN) द्वारा किया गया है.

खास बात यह है कि ये बसें पूरी तरह से बिजली से चलती हैं, जिससे ये पर्यावरण के अनुकूल हैं. आईआईटी परिसर में फिलहाल दो मॉडल की गाड़ियां चल रही हैं, इनमें एक छह सीटों वाली और दूसरी चौदह सीटों वाली गाड़ी है. इनका उपयोग छात्र और प्राध्यापक मुख्य द्वार से परिसर के विभिन्न भागों तक जाने के लिए कर रहे हैं.

इसको लेकर इसमें सफर करने वालों की मिली प्रतिक्रिया बेहद उत्साहजनक रही है. TIHAN के अधिकारियों ने बताया कि इन वाहनों में यात्रा करने वाले लगभग 90 प्रतिशत लोगों ने सेवा से संतुष्टि व्यक्त की और इसकी सुगमता और विश्वसनीयता की प्रशंसा की

एडवांस सेफ्टी सुविधाएं

सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए, ये चालक रहित बसें स्वायत्त आपातकालीन ब्रेकिंग और अनुकूली क्रूज नियंत्रण प्रणालियों से सुसज्जित हैं. ये विशेषताएं बस की गति को नियंत्रित करने में मदद करती हैं और यात्रा के दौरान सुरक्षा की एक अतिरिक्त परत प्रदान करती हैं.

ऑनबोर्ड एआई प्रणाली वाहन के मार्ग में आने वाली बाधाओं का पता लगाने में सक्षम है, जिससे यह स्वचालित रूप से सबसे सुरक्षित मार्ग का चयन कर सकता है. आईआईटी हैदराबाद परिसर में इन वाहनों का सफल संचालन भारत की स्वायत्त सार्वजनिक परिवहन की दिशा में एक मील का पत्थर है. यदि यह परियोजना लगातार अच्छा प्रदर्शन करती रही, तो यह भविष्य में अन्य भारतीय शहरों में भी चालक रहित सार्वजनिक परिवहन सेवाओं का मार्ग प्रशस्त कर सकती है।

स्वतंत्रता दिवस पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा दिए गए भाषण के लिए प्रयोग किया गया समय

2014 – 67 Minutes	2021 – 81 Minutes
2015 – 88 Minutes	2022 – 74 Minutes
2016 – 96 Minutes	2023 – 89 Minutes
2017 – 56 Minutes	2024 – 98 Minutes
2018 – 83 Minutes	
2019 – 92 Minutes	2025 – 103 Minutes
2020 – 90 Minutes	

लालकिले से पीएम मोदी का 'मिशन सुदर्शन चक्र' ऐलान: देश को मिलेगा तकनीकी सुरक्षा कवच

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली ।आजादी के 79वें वर्षगांठ पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लालकिले की प्राचीर से राष्ट्र को संबोधित करते हुए कई बड़े ऐलान किए। 103 मिनट लंबे भाषण में उन्होंने सुरक्षा, विकास, जनसंख्या संतुलन, नक्सलवाद, राष्ट्र सेवा और स्वदेशी को लेकर सरकार की प्राथमिकताओं को स्पष्ट किया। सबसे बड़ा ऐलान 'मिशन सुदर्शन चक्र' का रहा, जो आने वाले वर्षों में देश की सुरक्षा व्यवस्था को नई तकनीकी शक्ति से लैस करेगा।

मिशन सुदर्शन चक्र: तकनीक से होगा देश सुरक्षित

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि तकनीक का दायरा तेजी से बढ़ रहा है और इसके साथ ही सुरक्षा के क्षेत्र में महारत हासिल करना समय की मांग है। उन्होंने बताया कि 2025 तक सामरिक ठिकानों, सिविलियन क्षेत्रों, अस्पतालों, रेलवे स्टेशनों और आस्था के केंद्रों को उन्नत तकनीकी सुरक्षा कवच से लैस किया जाएगा।

उन्होंने भगवान श्रीकृष्ण से प्रेरणा लेते हुए कहा कि अगले 10 वर्षों में हम सुरक्षात्मक चक्र के मार्ग पर आगे बढ़ेंगे। यह नया हथियार तंत्र दुश्मन के किसी भी हमले को विफल करने में सक्षम होगा और यह पूरी तरह आधुनिक प्रणाली पर आधारित रहेगा।

हाई पावर डेमोग्राफी मिशन: जनसंख्या संतुलन पर फोकस

पीएम मोदी ने अपने भाषण में देश को एक नई चुनौती से आगाह किया। उन्होंने कहा कि "सोची-समझी साजिशों के तहत देश की डेमोग्राफी बदलने की कोशिश की जा रही है। घुसपैठिए आदिवासियों की जमीन पर कब्जा कर रहे हैं, जिससे देश की सुरक्षा को खतरा है।"

इसी के मद्देनजर हाई पावर डेमोग्राफी मिशन की शुरुआत की गई है, जो जनसंख्या के असंतुलन और इससे पैदा होने वाले संकट से निपटने के लिए ठोस कदम उठाएगा।

नक्सलवाद पर काबू: 125 जिलों से घटकर 20 तक

प्रधानमंत्री ने सुरक्षा के मोर्चे पर सरकार की उपलब्धियां भी गिनाईं। उन्होंने कहा, "कभी देश के 125 से ज्यादा जिले नक्सलवाद की चपेट में थे, आज यह समस्या सिर्फ 20 जिलों तक सीमित रह गई है।"

उन्होंने विशेष रूप से जनजातीय क्षेत्रों में किए गए विकास कार्यों का जिक्र किया और कहा कि एक समय बस्तर का नाम आते ही नक्सलवाद याद आता था, लेकिन आज वहीं के युवा ओलंपिक में देश का नाम रोशन कर रहे हैं।

आर.एस.एस.को लालकिले से सलाम

पीएम मोदी ने पहली बार लालकिले से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) की खुलकर तारीफ की। उन्होंने कहा, "सौ साल पहले जन्मे इस संगठन ने राष्ट्र निर्माण के लक्ष्य के साथ कार्य किया है। मैं पिछले 100 वर्षों से राष्ट्र सेवा में जुटे आरएसएस कार्यकर्ताओं के समर्पण को सलाम करता हूं।"

वोकल फॉर लोकल: दुकानदारों के लिए विशेष अपील

प्रधानमंत्री ने आर्थिक आत्मनिर्भरता पर जोर देते हुए कहा, "हमारा मंत्र होना चाहिए—समृद्ध भारत। आज की पीढ़ी को समृद्ध भारत के लिए अपना योगदान देना होगा।"

उन्होंने राजनीतिक दलों और युवाओं से आह्वान किया कि वोकल फॉर लोकल को जीवन का मंत्र बनाएं। छोटे दुकानदारों से आग्रह किया कि वे अपनी दुकानों पर यह तख्ती लगाएं— "यहां स्वदेशी माल बिकता है"।

देश के लिए मोदी का स्पष्ट संदेश

प्रधानमंत्री का यह भाषण केवल योजनाओं की घोषणा भर नहीं था, बल्कि इसमें एक दृढ़ राजनीतिक और सुरक्षा संदेश भी था—देश की सुरक्षा से समझौता नहीं होगा, तकनीक और ताकत दोनों के बल पर दुश्मन को जवाब दिया जाएगा, और विकास का लाभ समाज के हर वर्ग तक पहुंचेगा।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ऐतिहासिक लाल किले की प्राचीर से देश को संबोधित, एक खास रिकॉर्ड अपने नाम किया

79वें स्वतंत्रता दिवस के मौके पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ऐतिहासिक लाल किले की प्राचीर से देश को संबोधित किया। इस मौके पर उन्होंने एक खास रिकॉर्ड अपने नाम किया। पीएम मोदी ने लाल किले से अब तक का सबसे लंबा भाषण दिया। खास बात ये है कि इससे पहले भी ये रिकॉर्ड पीएम मोदी के नाम ही था। प्रधानमंत्री मोदी ने लगातार 12वीं बार स्वतंत्रता दिवस के मौके पर देश को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने करीब 103 मिनट लंबा भाषण देकर अपना ही पुराना रिकॉर्ड ब्रेक कर दिया। एक बार फिर इस ऐतिहासिक दिन सबसे लंबा भाषण देने का तमगा पीएम मोदी ने अपने नाम किया। इसके पहले किसी भी प्रधानमंत्री द्वारा सबसे लंबा भाषण देने का तमगा 98 मिनट का था, जो खुद उन्होंने ही साल 2024 में दिया था। पीएम मोदी से पहले सबसे लंबा भाषण देने का रिकॉर्ड देश के पहले प्रधानमंत्री एवं दिवंगत कांग्रेस नेता जवाहरलाल नेहरू के नाम था। नेहरू ने पहले स्वतंत्रता दिवस के मौके पर 1947 में लाल किले से 72 मिनट लंबा भाषण दिया था। हालांकि, 2015 में प्रधानमंत्री रहकर पीएम मोदी ने नेहरू के दशकों के पुराने रिकॉर्ड को तोड़ा और 86 मिनट लंबा भाषण दिया था। अब तक 12 बार देश को संबोधित कर चुके पीएम मोदी ने सिर्फ एक बार ही एक घंटे से कम का भाषण दिया, जो 2017 में 56 मिनट का था। यह अब तक का उनका सबसे छोटा भाषण था। इसके बाद 2014 में पहली बार प्रधानमंत्री पद की जिम्मेदारी संभालने के बाद उन्होंने 65 मिनट, 2015 में 86 मिनट, 2016 में 96 मिनट, 2018 में 82 मिनट, 2019 में 93 मिनट, 2020 में 86 मिनट, 2021 में 88 मिनट, 2022 में 83 मिनट, 2023 में 90 मिनट और 2024 में 98 मिनट का भाषण दिया था।

जन्माष्टमी का व्रत स्वास्थ्य या किसी कारण से नहीं कर पाते हैं तो इन उपायों को करने से मिलता है व्रत के बराबर पुण्य

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का त्योहार 16 अगस्त को मनाया जाएगा। इस त्योहार में भगवान श्रीकृष्ण की पूजा के साथ व्रत या उपवास का भी खास महत्व होता है। हिंदू धर्म शास्त्रों के अनुसार, कृष्ण जन्माष्टमी का व्रत करने से जाने-अनजाने में हुए पाप खत्म हो जाते हैं और जीवन में सुख-समृद्धि आती है। लेकिन कई बार भक्त स्वास्थ्य या निजी कारणों से जन्माष्टमी व्रत नहीं कर पाते हैं, ऐसे में कुछ उपायों को करके व्रत का फल प्राप्त किया जा सकता है। जानें जन्माष्टमी व्रत नहीं कर पा रहे हैं तो किन उपायों से व्रत का फल मिल सकता है।

जन्माष्टमी व्रत का फल पाने के लिए करें ये उपाय

अगर किसी खास वजह से जन्माष्टमी व्रत इस बार नहीं कर पा रहे हैं तो किसी ब्राह्मण या जरूरतमंद को भरपेट भोजन कराना चाहिए। अगर ऐसा करना संभव नहीं है तो किसी जरूरतमंद व्यक्ति को इतना धन का दान करें कि वह दो समय भरपेट भोजन कर सके।

गायत्री मंत्र का करें जाप

अगर ऐसा करना भी संभव नहीं है तो गायत्री मंत्र का 1000 बार जाप करना चाहिए। मान्यता है कि ऐसा करने से जन्माष्टमी व्रत का फल प्राप्त होता है।

पूजन सामग्री व पारण में लगने वाली सामग्री का दान

अगर जन्माष्टमी व्रत के नियमों का पालन करना व रखना संभव नहीं है तो व्रत करने वाले व्यक्ति को समस्त पूजन सामग्री व व्रत पारण में लगने वाली चीजों का दान करना चाहिए।

भगवान श्रीकृष्ण की विधिवत करें पूजा-अर्चना

अगर कोई व्यक्ति किसी खास कारण से जन्माष्टमी व्रत करने में असमर्थ है, तो उसे जन्माष्टमी पूजन विधि-विधान से करना चाहिए। आधी रात को कृष्णजी के जन्म के बाद ही भोजन करना चाहिए।

श्रीकृष्ण भगवान की भक्ति में रहें लीन

अगर जन्माष्टमी का व्रत नहीं कर पा रहे हैं तो, भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति में लीन रहना चाहिए और उनसे क्षमा मांगनी चाहिए और 'हरे कृष्णा हरे कृष्णा, कृष्णा कृष्णा हरे हरे' मंत्र का अधिक से अधिक जाप करना चाहिए।

जन्माष्टमी व्रत का फल

ब्रह्मवैवर्त पुराण के मुताबिक जन्माष्टमी व्रत को करने वाले व्यक्ति को सौ जन्मों के पापों से मुक्ति मिलती है और अंत में वैकुंठ लोक को जाता है। अग्नि पुराण के अनुसार, भादो माह के कृष्ण पक्ष की रोहिणी नक्षत्र युक्त अष्टमी तिथि का व्रत करने से व्यक्ति को पापों से मुक्ति मिलती है। यह उपवास भोग और भोग प्रदान करता है।

कृष्ण जन्माष्टमी आज

हिंदू धर्म में जन्माष्टमी का पर्व बहुत ही खास माना जाता है, जो भगवान श्रीकृष्ण को समर्पित है। श्रीकृष्ण के भक्तों को जन्माष्टमी का पूरे साल इंतजार रहता है। हर साल पूरे देश में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व भक्ति और उल्लास के साथ मनाया जाता है, लेकिन वृंदावन की जन्माष्टमी का महत्व ही अलग है, जहां स्वयं भगवान श्रीकृष्ण का जन्म हुआ था। भक्तों में इस दिन को लेकर जबरदस्त उत्साह देखने को मिलता है। इस खास मौके पर मंदिरों को भव्य तरीके से सजाया जाता है, विशेष पूजा-अर्चना की जाती है, साथ ही भजन-कीर्तन भी किए जाते हैं। खासकर वृंदावन स्थित प्रसिद्ध बांके बिहारी मंदिर में यह पर्व अत्यंत भव्यता के साथ मनाया जाता है।

कृष्ण जन्माष्टमी का इतिहास

==============================

कृष्ण जन्माष्टमी, जिसे जन्माष्टमी भी कहा जाता है, भारत के प्रमुख हिंदू त्योहारों में से एक है। यह भगवान कृष्ण के जन्मोत्सव का उत्सव है। हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार, कृष्ण प्रेम, करुणा, स्नेह और भक्ति के देवता हैं। वे न केवल भारत में, बल्कि पूरे विश्व में सबसे लोकप्रिय और प्रिय देवताओं में से एक हैं। कृष्ण जन्माष्टमी को कृष्ण जयंती, गोकुलाष्टमी, सतम अथम और कई अन्य नामों से भी जाना जाता है। उत्तर भारत से लेकर दक्षिण भारत तक, लोग इस उत्सव को बड़े हर्ष और उल्लास के साथ मनाते हैं। हिंदू परंपरा में कृष्ण जन्माष्टमी का गहरा महत्व है। यह वर्षों से मनाया जाता रहा है। दरअसल, कृष्ण जन्माष्टमी के इतिहास की बात करें तो यह काफी समृद्ध है। यह उत्सव लगभग 5,200 साल पुराना है। इस प्रकार, यह सबसे पुराने और स्थायी उत्सवों में से एक है। तब से, यह त्योहार भाद्रपद माह के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को मनाया जाता रहा है। जन्माष्टमी पर, भक्त कृष्ण के बाल रूप की पूजा करते हैं, जिन्हें लड्डू गोपाल, बाल कृष्ण या बाल गोपाल कहा जाता है।

कृष्ण जन्माष्टमी पूजा समय

==============================

कृष्ण जन्माष्टमी 2025 लगातार दो दिन, 15 और 16 अगस्त, 2025 को मनाई जाएगी।

कृष्ण जन्माष्टमी मनाने का सांस्कृतिक महत्व

==============================

कृष्ण जन्माष्टमी का सांस्कृतिक महत्व बहुत अधिक है। इस वर्ष हम भगवान कृष्ण की 5252वीं जयंती मना रहे हैं। इसका सांस्कृतिक महत्व भगवान कृष्ण की जन्म कथाओं से जुड़ा है, जिन्हें भगवान विष्णु का आठवाँ अवतार या रूप भी कहा जाता है। यह त्योहार न केवल कृष्ण, बल्कि उनके माता-पिता, माँ देवकी और वासुदेव का भी सम्मान करता है। माँ देवकी ने कारागार में रहते हुए, कठिन परिस्थितियों का सामना करते हुए, कृष्ण को जन्म दिया। जन्माष्टमी प्रेम और धर्म में विश्वास का उत्सव है। यह कृष्ण की कंश पर विजय, बुराई पर अच्छाई की विजय का स्मरण कराती है।

जन्माष्टमी पूजा अनुष्ठान

========================

सुबह की सफाई

____

आप जन्माष्टमी के दिन की शुरुआत सुबह की सफाई से कर सकते हैं। अपने घर की सफाई करें और फिर पूजा स्थल को व्यवस्थित करें। आप उसे फूलों, रंगों वगैरह से कृष्ण जन्माष्टमी रंगोली से

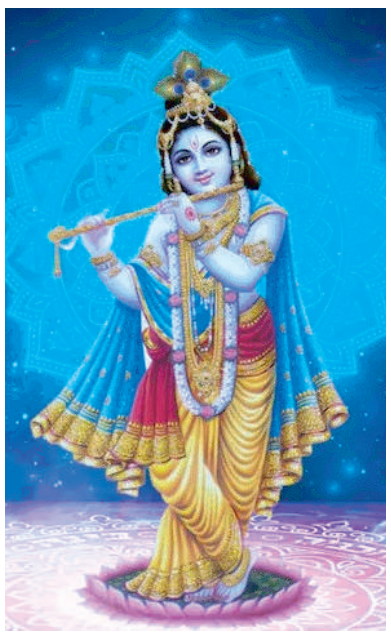

सजा सकते हैं।

उपवास या उपवास व्रत

____

भगवान कृष्ण के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में भक्तजन व्रत भी रखते हैं। यह दो प्रकार का हो सकता है। आप फल या दूध का सेवन कर सकते हैं। या फिर आप बिना पानी के निर्जला व्रत भी रख सकते हैं। यह व्रत भगवान के प्रति आपके प्रेम और समर्पण को दर्शाता है।

*** मूर्ति अभिषेकम**

____

इसके बाद, आधी रात को, आप अभिषेक जैसे अनुष्ठान कर सकते हैं। अभिषेक पूजन के लिए आप पंचामृत, गंगाजल जैसी वस्तुओं का उपयोग कर सकते हैं।

*** ड्रेस अप और सजावट**

____

अब, अपने बाल गोपाल को सुंदर पोशाक पहनाएं और उनकी उपस्थिति का स्वागत करें।

*** आरती और भजन**

____

मध्य रात्रि में कृष्ण जन्माष्टमी की आरती और भजन भी गाये जाते हैं, जिसमें कृष्ण के नवजात शिशु अवतार का स्वागत करने के लिए घी के दीये जलाए जाते हैं।

*** नैवेघ**

_____

इस अनुष्ठान में मूर्ति को भोग अर्पित किया जाता है। इसमें फल, सूखे मेवे, खीर या अन्य प्रकार की भोग सामग्री शामिल हो सकती है।

*** झूला समारोह**

____

झूला समारोह में कृष्ण जन्माष्टमी भजन या लोरी के साथ कृष्ण के पालने को थोड़ा झुलाना शामिल है।

*** पाराना**

_____

एक बार जब आप आरती और प्रसाद ग्रहण कर लें, तो आप पारण मुहूर्त में अपना व्रत तोड़ सकते हैं।

*** अतिरिक्त परंपराएँ**

____

विभिन्न क्षेत्रों में दही हांडी और रास लीला जैसे अतिरिक्त अनुष्ठान भी किए जाते हैं।

15 अगस्त 2025 — सिर्फ़ एक तारीख नहीं, एक जिम्मेदारी है

आज हम एक बार फिर से तिरंगे के साये में खड़े हैं। हवा में लहराता हुआ वो तिरंगा हमें सिर्फ़ हमारी आज़ादी का नहीं, बल्कि उन लाखों बलिदानों का भी स्मरण कराता है, जिन्होंने अपनी सांसें इस मिट्टी के नाम कर दीं।

₹लिपट कर बदन कई तिरंगे में आज भी आते हैं,
यूँ ही नहीं दोस्तों, हम ये पर्व मनाते हैं₹

ये पंक्तियां सिर्फ़ कविता नहीं, बल्कि हमारे इतिहास की सच्चाई हैं।

हम आज जिस खुले आसमान में सांस ले रहे हैं, उसके पीछे अनगिनत शहीदों का लहू, माताओं के आंसू, और करोड़ों भारतीयों की तपस्या है।

15 अगस्त का मतलब सिर्फ़ छुट्टी का दिन या सोशल मीडिया पर ₹Happy Independence Day₹ लिख देना नहीं है

ये दिन हमें आईना दिखाता है — कि हम उस आज़ादी के लायक बन भी पाए हैं या नहीं।

अतीत की कुर्बानियां – जो हमें याद रखनी ही होंगी

सोचो, जब भगत सिंह ने फांसी से पहले अपने दोस्तों को गले लगाया होगा, तो उनके मन में कौन-सा डर रहा होगा? नहीं, डर तो कहीं नहीं था बस एक अजीब-सी मुस्कान और दिल में देश का सपना था।

सोचो, जब नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने कहा था "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूंगा", तब हर नौजवान का खून कैसे खौल उठा होगा।

सोचो, जब रानी लक्ष्मीबाई ने तलवार उठाई थी, तब उनके सामने सिर्फ़ युद्ध नहीं, बल्कि एक पूरी पीढ़ी का भविष्य खड़ा था।

इतिहास किताबों में लिखे अक्षर नहीं होते, वो हमारे कंधों पर रखा भार होते हैं।

अगर हम उन्हें भूल जाएं, तो हमारा अस्तित्व भी कमजोर पड़ जाएगा।

आज का भारत – अवसर और चुनौतियां

2025 का भारत, 1947 के भारत से बिल्कुल अलग है। अब हमारे पास ताकत है, तकनीक है, और दुनिया में हमारी एक पहचान है। लेकिन सवाल ये है — क्या हम सही मायनों में आज़ाद हैं?

क्या हम भ्रष्टाचार, नफ़रत, आलस, और अज्ञानता से आज़ाद हो पाए हैं?

क्या हम अपने देश की सड़कों, नदियों, खेतों, और शिक्षा व्यवस्था को इतना मज़बूत बना पाए हैं कि अगली पीढ़ी हमें गर्व से याद करे?

सच कहूं तो आज़ादी एक दिन की नहीं, हर दिन की लड़ाई है।

आज हमारा दुश्मन कोई बाहरी ताकत नहीं, बल्कि हमारी सोच की सीमाएं हैं।

तिरंगे की असली कसम
तिरंगे को सलामी देना आसान है,
पर तिरंगे की इज्जत निभाना मुश्किल।

अगर हम सच में देश प्रेमी हैं, तो हमें 3 कसम खानी होंगी –

ईमानदारी की कसम – अपने काम में, अपने शब्दों में, और अपने वादों में।

एकता की कसम – जात, धर्म, भाषा के नाम पर कभी बंटेंगे नहीं।

कर्तव्य की कसम – चाहे कोई देखे या न देखे, हम अपना कर्तव्य निभाएंगे।

2025 में हमें क्या सीखना चाहिए

देशप्रेम सिर्फ़ शब्दों में नहीं, कर्मों में दिखता है।

सोशल मीडिया की पोस्ट से ज्यादा ज़रूरी है, ज़मीन पर बदलाव लाना।

शहीदों के नाम पर राजनीति नहीं, प्रेरणा लेनी चाहिए।

हर नागरिक एक सैनिक है — अगर वो अपने कर्तव्य पर डटा है।

अंतिम बात – एक व्यक्तिगत वादा

इस 15 अगस्त को मैं अपने आप से ये वादा करता हूं कि

₹मैं शिकायत कम, योगदान ज्यादा करूंगा।

मैं तिरंगे के रंगों को सिर्फ़ कपड़े में नहीं, अपने स्वभाव में बसाऊंगा।

केसरिया – साहस,
सफेद – सत्य और शांति,
हरा – विकास और करुणा।
और बीच का अशोक चक्र – सतत प्रयास।₹

अगर हम सब ये छोटा सा संकल्प ले लें, तो यकीन मानो –

अगली पीढ़ी हमें सिर्फ़ याद ही नहीं करेगी, बल्कि हमारे किए पर गर्व भी करेगी।

वंदे मातरम्। जय हिन्द

देशभक्ति अनिवार्य : देशभक्ति की भावना का गुण हर भारतीय में होना आवश्यक है

देशभक्ति दुनिया की सबसे शुद्ध भावनाओं में से एक है। एक देशभक्त अपने देश के हित के प्रति निःस्वार्थ भाव महसूस करता है। वह अपने देश के हित और कल्याण को सबसे पहले रखता रखते है। वह बिना सोचे समझे अपने देश के प्रति त्याग करने के लिए तैयार भी हो जाता है।

हमारे देश को हमारी मातृभूमि के रूप में जाना जाता है और हमें अपने देश से वैसे ही प्यार करना चाहिए जैसे हम अपनी माँ से करते हैं, जो लोग अपने देश के लिए वही प्रेम और भक्ति अनुभव करते है, जो वो अपने माँ और परिवार के लिए करते है तो सहीं मायने में वही असली देशभक्त होते हैं।

देशभक्ति एक गुण है जिसे प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर होना चाहिए। देशभक्तों से भरा देश, निश्चित रूप से उस स्थान की तुलना में, अच्छा रहने योग्य बन जाता है जहाँ लोग धर्म, जाति, पंथ और अन्य मुद्दों के नाम पर सदैव एक दूसरे के साथ लड़ा करते हैं। वह जगह जहाँ लोगों के पास कम स्वार्थ होगें वहाँ निश्चित रूप से कम संघर्ष होंगे।

जब हर कोई राष्ट्र को हर पहलू से सुदृढ़ बनाने की दिशा में समर्पित रहता है, तो ऐसा कोई विकल्प नहीं है जो देश को आगे बढ़ने और विकसित होने से रोके। देशभक्तों ने राष्ट्र हित को सबसे पहले रखा और इसके सुधार के लिए सदैव समर्पित रहे।

एक अच्छा राष्ट्र वह है जहाँ हर समय शांति और सद्भाव बनाए रखा जाता है। जहाँ लोगों के अन्दर अपनत्व की भावना होती है तथा वे दूसरे की सहायता और समर्थन करने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। देशभक्ति की भावना देशवासियों के बीच भाईचारे की भावना को बढ़ावा देने के लिए जानी जाती है।

देशभक्त, देश के लक्ष्य तथा उसके सुधार के लिए काम करते हैं। जब हर किसी को एक ही लक्ष्य या मिशन की तरफ आकर्षित किया जाता है तो ऐसा कोई अवरोध नहीं होता, जो उन्हें अपने लक्ष्य को हासिल करने से रोक सके।

देशभक्त बिना किसी व्यक्तिगत रुचि के अपने देश के लिए निःस्वार्थ रूप से कार्य करते हैं। यदि हर किसी में देशभक्ति की भावना है और वह अपने व्यक्तिगत हित को संतुष्ट करने के बारे में नहीं सोचता है, तो निश्चित रूप से इससे देश को लाभ होता है।

यदि राजनीतिक नेताओं के अन्दर देशभक्ति की भावना है, तो वे स्व हित के विपरीत देश हित के लिए कार्य करेंगें। इसी तरह, यदि देश के सरकारी अधिकारी और अन्य नागरिक देश की सेवा की दिशा में दृढ़ रहेगें तथा स्वयं के लिए स्वार्थी बनकर धन कमाने से दुर रहेगें तो निश्चित रुप से भ्रष्टाचार का स्तर कम हो जाएगा।

देशभक्त होना एक महान गुण है। हमें अपने देश से प्यार और उसका सम्मान करना चाहिए और जितना भी हम कर सकते हैं देश के प्रति उतना करना चाहिए। देशभक्ति की भावना रखना सकारात्मक बिन्दुओं को दर्शाते हैं कि यह कैसे देश को समृद्ध और बढ़ने में सहायता कर सकता है।

हालांकि, कुछ लोग का देश के प्रति अत्यधिक प्रेम और अपने देश को श्रेष्ठतर और सर्वोपरी मानना अंधराष्ट्रीयता को दर्शाता है कुछ भी अत्यधिक होना बेकार होता है चाहे वो देश के प्रति अधिक प्यार ही क्यू न हो। अंधराष्ट्रीयता में अपने देश की विचारधाराओं और अपने लोगों की श्रेष्ठता की तर्कहीन धारणा में दृढ़ विश्वास दूसरों के लिए घृणा की भावना पैदा करता है। यह अक्सर देशों के बीच संघर्ष और युद्ध को बढ़ावा देती है साथ ही साथ शांति और सद्भाव को भी बाधित करती हैं।

किसी का उसके मूल भूमि के प्रति प्यार उसके देश के प्रति उसका सबसे शुद्धतम रूप है। एक व्यक्ति जो अपने देश के लिए अपने हितों का त्याग करने के लिए तैयार रहता है, हमें उसे नमस्ते करना चाहिए है। दुनिया के प्रत्येक देश को ऐसी भावना रखने वाले लोगों की अत्यधिक आवश्यकता है।

नमस्ते सदा वत्सले मातृभूमे त्वया हिन्दुभूमे सुखं वर्धितोहम्।

महामङ्गले पुण्यभूमे त्वदर्थे पतत्वेष कायो नमस्ते नमस्ते।।

!!!...७८ वें स्वतंत्रता दिवस की सभी हिन्दवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ... !!!

भूख बढ़ाने के घरेलू उपाय

भूख न लगना या भूख कम लगना कई बार पाचन तंत्र से जुड़ी समस्याओं, मानसिक तनाव, या जीवनशैली की वजह से हो सकता है। नीचे कुछ प्रभावी घरेलू उपाय दिए गए हैं जो भूख बढ़ाने में मदद कर सकते हैं:

1. अदरक (Ginger)

रोज़ाना खाने से पहले 1-2 ग्राम ताजा अदरक का टुकड़ा थोड़ा नमक डालकर चबाने से पाचन सुधरता है और भूख बढ़ती है।

2. नींबू और शहद

एक गिलास गुनगुने पानी में 1 चम्मच नींबू का रस और 1 चम्मच शहद मिलाकर सुबह खाली पेट पिएं।

3. त्रिफला चूर्ण

रात को सोने से पहले गुनगुने पानी के साथ 1 चम्मच त्रिफला चूर्ण लें। इससे पाचन ठीक रहता है और भूख खुलती है।

4. जीरा (Cumin)

1 चम्मच जीरा को भूनकर पाउडर बना लें और इसे एक गिलास छाछ या दही में मिलाकर रोज़ लें।

5. पुदीना का रस

पुदीने की पत्तियों का रस निकालकर उसमें थोड़ा काला नमक और नींबू का रस मिलाकर सेवन करें।

6. काली मिर्च और शहद

काली मिर्च पाउडर में शहद मिलाकर रोज सुबह लें। यह भूख बढ़ाने में असरदार होता है।

7. अजवाइन (Carom Seeds)

अजवाइन को भूनकर उसमें काला नमक मिलाकर खाने से पहले थोड़ा चबाएं। इससे गैस और अपच दूर होती है और भूख बढ़ती है।

8. छाछ (Buttermilk)

रोज़ाना दोपहर के खाने के साथ छाछ पिएं। इसमें जीरा पाउडर और काला नमक डालें। यह पाचन शक्ति बढ़ाता है।

--- अतिरिक्त सुझाव:

नियमित व्यायाम करें – हल्का फुल्का योग या वॉक भूख बढ़ाने में मदद करता है।

भोजन का समय नियमित रखें – तय समय पर खाना खाने से शरीर की भूख की आदत बनती है।

तनाव कम करें – मानसिक तनाव भूख को कम करता है।

सुंदर जीवन कैसे

सुंदर जीवन आसानी से हमारी गोद में आ जाता है; इसके लिए हमें हर दिन सक्रिय रूप से काम करना चाहिए। यह हमारे प्रयासों, हमारे बलिदानों, हमारे प्यार और हमारे विश्वास का परिणाम है। यह एक ऐसी यात्रा है जिसके लिए समर्पण, दृढ़ता और सुधार के लिए लगातार प्रयास करने की इच्छा की आवश्यकता होती है।

सुंदर जीवन के निर्माण में प्रार्थना एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। प्रार्थना के माध्यम से ही हम उच्च शक्ति से जुड़ते हैं, मार्गदर्शन चाहते हैं और जीवन की चुनौतियों का सामना करने की शक्ति पाते हैं। प्रार्थना हमें अपने आशीर्वाद पर विचार करने, कृतज्ञता व्यक्त करने और आवश्यकता पड़ने पर सहायता माँगने की अनुमति देती है। यह कठिन समय में आराम, सांत्वना और आशा का स्रोत है। प्रार्थना को अपनी दिनचर्या में शामिल करके, हम शांति, उद्देश्य और आध्यात्मिक पूर्ति की भावना विकसित करने में सक्षम होते हैं जो हमारे जीवन को समृद्ध बनाती है और हमें हमारे सच्चे स्व के करीब लाती है।

सुंदर जीवन के निर्माण में कड़ी मेहनत एक और आवश्यक घटक है। कड़ी मेहनत के माध्यम से ही हम अपने लक्ष्यों को प्राप्त करते हैं, अपनी क्षमता को पूरा करते हैं और अपने आस-पास की दुनिया पर सकारात्मक प्रभाव डालते हुए चरित्र निर्माण करते हैं। कड़ी मेहनत के लिए समर्पण, अनुशासन और स्वयं को अपने आराम क्षेत्र से परे धकेलने की इच्छा की आवश्यकता होती है।

सुंदर जीवन के निर्माण में त्याग के माध्यम से ही हम उन चीजों को प्राथमिकता देने में सक्षम होते हैं जो हमारे लिए वास्तव में मायने रखती हैं, जो चीजें अब हमारे काम की नहीं हैं उन्हें छोड़ दें और नए अवसरों और अनुभवों के लिए जगह बनाएं। त्याग के लिए हमें कठिन विकल्प चुनने, अल्पकालिक सुखों को त्यागने और दीर्घकालिक लक्ष्यों में निवेश करने की आवश्यकता होती है। त्याग के माध्यम से ही हम विकसित होने और स्वयं के सर्वश्रेष्ठ संस्करण बनने में सक्षम होते हैं। त्याग से, हम एक ऐसा जीवन बनाने में सक्षम होते हैं जो हमारे मूल्यों, जुनून और उद्देश्य के अनुरूप हो।

सुंदर जीवन के निर्माण में प्रेम कदाचित परम शक्तिशाली शक्ति है। प्रेम के माध्यम से ही हम दूसरों से जुड़ पाते हैं, सार्थक संबंध विकसित कर पाते हैं, और आनंद, तृप्ति और अपनेपन का अनुभव कर पाते हैं। प्रेम के लिए हमें अपने और दूसरों के प्रति संवेदनशील, खुले और दयालु होने की आवश्यकता होती है। प्रेम के माध्यम से ही हम अपने जीवन में अर्थ, उद्देश्य और खुशी पा पाते हैं। अपनी यात्रा में प्रेम को एक मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में अपनाकर, हम एक ऐसा जीवन बनाने में सक्षम होते हैं जो जुड़ाव, सहानुभूति और समझ से भरपूर हो।

!!!...Life Itself is An Investment. Invest in Younger Age to Find Returns in Older Age... !!!

हम बदलें तो दुनिया बदले

उम्रदराज न बनें उम्र को दराज़ में रख दें।

खो जाएं ज़न्दिगी में,
मौत का इन्तज़ार न करें

जिनको आना है आए,
जिसको जाना है जाए।
पर हमें जीना है।
ये न भूल जाएं।

जिनसे मिलता है प्यार,
उनसे ही मिलें बार बार।

महफिलों का शौक रखें
दोस्तों से प्यार करें
जो रिश्ते हमें समझ सकें,
उन रिश्तों की कद्र करें।

बंधें नहीं किसी से भी,
ना किसी को बँधने पर
मजबूर करें।

दिल से जोड़ें हर रिश्ता,
और उन रिश्तों से दिल से जुड़े रहें।

हँसना अच्छा होता है
पर अपनों के लिये,
रोया भी करें।

याद आएं कभी अपने तो,
आँखें अपनी नम भी करें।

ज़न्दिगी चार दिन की है,
तो फिर शिकवे शिकायतें
कम ही करें।

उम्र को दराज़ में रख दें
उम्रदराज़ न बनें !!

हमेशा मुस्कुराते रहिए

स्वतंत्रता दिवस पर CBI के छह अफसरों को विशिष्ट और 15 को सराहनीय सेवा के लिए पुलिस पदक, जानें किन्हें मिला सम्मान

79वें स्वतंत्रता दिवस पर सीबीआई के 21 अफसरों और कर्मचारियों को उनकी उत्कृष्ट सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया। इनमें से छह अफसरों को विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति पुलिस पदक दिया गया। वहीं 15 को सराहनीय सेवा के लिए पुलिस पदक से सम्मानित किया गया। ये सम्मान सीबीआई कर्मियों के समर्पण और कर्तव्यनिष्ठा का प्रतीक है।

नई दिल्ली। स्वतंत्रता दिवस के मौके पर केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (CBI) के 21 अफसरों और कर्मचारियों को उत्कृष्ट एवं सराहनीय सेवा के लिए सम्मानित किया गया है। इनमें से छह अफसरों को विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति पुलिस पदक और 15 को सराहनीय सेवा के लिए पुलिस पदक दिया जाएगा।

इन्हें मिला राष्ट्रपति पुलिस पदक

विवेक प्रियदर्शी (पुलिस उप महानिरीक्षक, बीएसएफबी, नई दिल्ली)

मच्छिंद्र रामचंद्र कडोले (पुलिस उप महानिरीक्षक, बीएसएफबी, कोलकाता)

चि. वेंकट नरेंद्र देवे (अपर पुलिस अधीक्षक, एसीबी, हैदराबाद)

बंडी पेड्डी राजू (अपर पुलिस अधीक्षक, ईओ-III, नई दिल्ली)

विशाल (पुलिस उपाधीक्षक, नीति प्रभाग, नई दिल्ली)

अभिजीत सेन (प्रधान आरक्षक, ईओबी, कोलकाता)

इन्हें दिया गया पुलिस पदक

अनूप टी. मैथ्यू (पुलिस उप महानिरीक्षक, मुख्यालय)

बाल करण सिंह और सुभाष चंद्र शर्मा (उप विधि सलाहकार, नई दिल्ली)

सुनील दत्त (अपर पुलिस अधीक्षक, लखनऊ)

अशोक कुमार (पुलिस उपाधीक्षक, कोलकाता)

के. विजया वैष्णवी (पुलिस उपाधीक्षक, चेन्नई),

अजय सिंह गहलौत (पुलिस उपाधीक्षक, नई दिल्ली),

दिलबाग सिंह जसरोटिया (अपराध सहायक, जम्मू)

पवन कुमार भारद्वाज (सहायक उपनिरीक्षक, मुख्यालय)

मोहन सिंह जादौन (प्रधान आरक्षक, जयपुर)

अरबिंद गरई (प्रधान आरक्षक, इम्फाल)

चितिमिरेड्डी सूर्यनारायण रेड्डी (प्रधान आरक्षक, बैंगलोर)

सतीश कुमार (आरक्षक, नई दिल्ली)

रामबाबू येदिदा (आरक्षक, विशाखापत्तनम)

नवल कुमार दीक्षित (आरक्षक, मुख्यालय)

हुमायूं के मकबरे के पीछे दरगाह शरीफ पत्ते शाह की दीवार व छत गिरी, मलबे में दबकर छह लोगों की मौत

दिल्ली के निजामुद्दीन इलाके में हुमायूं के मकबरे के पीछे दरगाह शरीफ पत्ते शाह की दीवार अचानक ढह गई। मलबे में 10 लोग दब गए। फायर ब्रिगेड पुलिस और एनडीआरएफ ने रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू किया। मलबे से सभी 10 घायलों को निकालकर एम्स और आरएमएल में भर्ती कराया गया। जहां इलाज के दौरान तीन महिलाओं समेत छह लोगों की मौत हो गई।

दिल्ली। निजामुद्दीन स्थित हुमायूं के मकबरे के पास शुक्रवार शाम को वर्षा की वजह से दरगाह शरीफ पत्ते वाली की 50 साल पुरानी दीवार व छत गिर गई। इसके मलबे में दबने से तीन महिला सहित छह की लोगों की मौत हो गई, जबकि पांच घायल हो गए। घायलों को एम्स ट्रामा सेंटर, लोकनायक और आरएमएल अस्पताल में भर्ती कराया गया है। दक्षिणी पूर्वी जिले के पुलिस उपायुक्त डॉ. हेमंत तिवारी ने बताया कि दोपहर 3:55 मिनट पर निजामुद्दीन थाना पुलिस को सूचना मिली कि हुमायूं के मकबरे के साथ दरगाह शरीफ पत्ते वाली के कमरे की दीवार व छत गिर गई है।

सूचना मिलते ही पुलिस, एनडीआरएफ व दमकल की टीम मौके पर पहुंची और बचाव अभियान शुरू किया। यहां पर दरगाह में बने पांच में दो कमरों की दीवार व छत गिरी थी। टीम ने 12 लोगों को मलबे से बाहर निकालकर अस्पताल पहुंचाया।

यहां पर डॉक्टरों ने तीन पुरुषों और तीन महिलाओं को मृत घोषित कर दिया। इनकी पहचान 56 वर्षीय मीना अरोड़ा, 24 वर्षीय मोनुष्का अरोड़ा, 40 वर्षीय अनीता सैनी, 35 वर्षीय मोइनुद्दीन, 79 वर्षीय स्वरूप चंद और आरिफ के रूप में हुई है। घायलों में चार साल का बच्चा आर्यन व शमीम, रशद प्रवीन, गुड़िया प्रवीन और रानी शामिल है।

79वां स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर दिल्ली भाजपा कार्यालय में अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने गणमान्य अतिथियों की उपस्थिती में किया ध्वजारोहण

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली : 79वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर आज दिल्ली भाजपा कार्यालय में प्रदेश अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने गणमान्य अतिथियों की उपस्थिती में ध्वजारोहण किया।

इस अवसर पर सांसद एवं पूर्व अध्यक्ष मनोज तिवारी, संगठन महामंत्री पवन राणा, महामंत्री विष्णु मित्तल, उपाध्यक्ष एवं विधायक राजकुमार भाटिया एवं गजेन्द्र यादव, विधायक श्याम शर्मा, कार्यालय मंत्री बृजेश राय एवं अमित गुप्ता, मीडिया प्रमुख प्रवीण शंकर कपूर, मीडिया रिलेशन प्रमुख विक्रम मित्तल, महिला मोर्चा अध्यक्ष ऋचा पांडे, युवा मोर्चा अध्यक्ष सागर त्यागी, पूर्व विधायक सुभाष सचदेवा एवं नितिन त्यागी आदि प्रमुख थे।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने अपने शुभकामना संदेश में देश एवं दिल्ली वासियों को शुभकामना देते हुए कहा की आज इस अवसर पर हम पहलगाम के शहीद भाईयों की स्मृति को सलाम करते हैं और भारतीय सेना को आप्रेशन सिंदूर की सफलता से भारत का गौरव लौटाने के लिए बधाई दी।

सचदेवा ने कहा की दिल्ली में 10 वर्ष के आराजक शासन के बाद आया आज का 79वां स्वतंत्रता दिवस दिल्ली वासियों के लिए विशेष हर्ष का दिन है और हम सब दिल्ली सरकार के साथ मिलकर दिल्ली को नया स्वरूप देने का संकल्प लेते हैं।

वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा स्वतंत्रता दिवस बड़े राष्ट्रीय ध्येय संकल्पों के साथ ही सामाजिक बुराईयों से मुक्ति का संकल्प लेने का भी दिन है।

उन्होने कहा है यह खेद का विषय है की स्वतंत्र भारत के 79 वर्ष बाद महिलाओं से छेड़छाड़ जैसी समाजिक बुराई हमे शर्मसार करती हो

सचदेवा ने दिल्ली वासियों से अपील की है कि इस स्वतंत्रता दिवस आईये हम दिल्ली की बहन बेटियों बहुओं को घूरती आंखों से मुक्त करवाने का संकल्प लें ताकि वह भी खुल कर अपना जीवन जी सकें।

10 साल की उम्र में बोधना बनी शतरंज की इंटरनेशनल मास्टर, किया सबको हैरान!

परिवहन विशेष न्यूज

ब्रिटेन में भारतीय मूल की 10 वर्षीय शतरंज खिलाड़ी बोधना शिवानंदन ने इतिहास रच दिया है। वह किसी ग्रैंडमास्टर को हराने वाली सबसे कम उम्र की महिला शतरंज खिलाड़ी बन गई हैं। यह उपलब्धि उन्होंने लिवरपूल में आयोजित 2025 ब्रिटिश चेस चैंपियनशिप के आखिरी राउंड में हासिल की, जब उन्होंने 60 वर्षीय ग्रैंडमास्टर पीटर वेल्स को मात दी। बोधना ने यह रिकॉर्ड 10 साल, 5 महीने और 3 दिन की उम्र में अपने नाम किया, जिससे उन्होंने अमेरिकी खिलाड़ी करिसा यिप का 2019 का रिकॉर्ड भी पीछे छोड़ दिया।

भारतीय जड़ों से ब्रिटिश माहौल तक

बोधना का परिवार तमिलनाडु के त्रिची से है। उनके पिता आईटी सेक्टर में काम करते हैं और 2007 में लंदन आकर बसे। बोधना का जन्म और पालन-पोषण लंदन में ही हुआ। पांच साल की उम्र में बोधना ने घर में ही जहमत बाज खेलना शुरू किया और पहले माता-पिता के समर्थन से, फिर पूरे इंग्लैंड के प्रशंसकों के दिलों में जगह बना ली।

अभूतपूर्व उपलब्धियों की लकीर

बोधना ने अब तक तीन वर्ल्ड जूनियर टाइटल अपने नाम किए हैं और यूरोपियन स्कूल्स चेस चैंपियनशिप में 24 में से सभी मैच जीतकर तीन गोल्ड मेडल भी हासिल किए हैं। एन्ट्री के कुछ साल में ही उन्होंने महिला फाइड मास्टर (WFM) का खिताब पाया, इसके अलावा महिला इंटरनेशनल मास्टर (WIM) और महिला ग्रैंडमास्टर (WGM) नॉर्म भी उसी टूर्नामेंट में हासिल कर लिया। उनकी परिपक्वता, खेल की समझ व मध्य व आखिरी दौर में शानदार चालों ने उन्हें कम उम्र में बहुत विदुषी बनाया है।

शिक्षा और रुचियों का अद्भुत तालमेल

बोधना की दिनचर्या शतरंज तक सीमित नहीं रहती। वह स्कूल में पढ़ाई के साथ-साथ पियानो और वायलिन भी सीखती हैं। उनके पिता ने बताया, "बोधना को खेल शुरू करने में कोई दबाव नहीं था। खुद से उन्होंने शतरंज खेलना शुरू किया और आगे बढ़ती गई।" ताजगी दायक बात यह है कि शतरंज के अतिरिक्त भी उनकी रुचियां बहुआयामी हैं।

अद्वितीय मुकाबला: ग्रैंडमास्टर के खिलाफ धमाकेदार जीत

लिवरपूल की इस चैंपियनशिप के आखिरी राउंड में, बोधना ग्रैंडमास्टर पीटर वेल्स से भिड़ीं। खेल मध्य तक वेल्स की स्थिति मजबूत थी, लेकिन बोधना ने निरंतर दबाव बनाए रखा। 39वीं चाल में वेल्स की एक छोटी सी गलती पर बोधना ने बेहतरीन रणनीतिक चालों के जरिए खेल पलट दिया और जीत दर्ज की। इंग्लिश चेस फेडरेशन के कमेंटेटर ने कहा, "उन्होंने वाकई करिश्माई जीत दर्ज की... वह किसी जादूगर जैसी लगती हैं!"

मुक्ति पर्व: देश की स्वतंत्रता के साथ आत्मिक जागृति का पावन पर्व भक्ति में आजादी की मुक्ति निरंकारी राजपिता रमित

मुख्य संवाददाता/सुषमा रानी

दिल्ली : सम्पूर्ण भारतवर्ष ने जहां स्वतंत्रता के 79 गौरवशाली वर्ष का उत्सव मनाया, वहीं संत निरंकारी मिशन ने मुक्ति पर्व को आत्मिक स्वतंत्रता के रूप में श्रद्धा और समर्पण से भव्यतापूर्वक आयोजित किया। यह पर्व केवल एक स्मृति नहीं, बल्कि आत्मिक चेतना के जागरण और जीवन के परम उद्देश्य का प्रतीक है।

मुक्ति पर्व समागम का आयोजन निरंकारी राजपिता रमित की पावन अध्यक्षता में दिल्ली स्थित निरंकारी ग्राउंड नं. 8, बुराड़ी रोड पर किया गया जिसमें दिल्ली एवं एन.सी.आर. के क्षेत्रों से हज़ारों श्रद्धालु और भक्तों ने सम्मिलित होकर सतगुरु के आदेशानुसार उन महान संत विभूतियों को श्रद्धा सुमन अर्पित किए जिन्होंने मुक्तिमार्ग को प्रशस्त करने हेतु अपना सम्पूर्ण जीवन ही मानवता की सेवा में अर्पित कर दिया।

इसके अतिरिक्त विश्वभर में मिशन की सभी शाखाओं में भी मुक्ति पर्व के अवसर पर विशेष सत्संग का आयोजन कर इन दिव्य संतों को नमन किया गया। श्रद्धालुजनों ने शहनशाह बाबा अवतार सिंह, जगत माता बुद्धवंती, राजमाता कुलवंत कौर, माता सविंदर हरदेव, भाई साहब प्रधान लाभ सिंह एवं अन्य अनेक समर्पित भक्तों को हृदय से स्मरण कर उनके जीवन से प्रेरणा प्राप्त की।

आध्यात्मिकता के इस पावन वातावरण में समस्त श्रद्धालुजनों को सम्बोधित करते हुए निरंकारी राजपिता ने फरमाया कि आज 15 अगस्त को जहाँ देश आज़ादी का पर्व मना रहा है, वहीं संतजन इसे मुक्ति पर्व के रूप में आत्मचेतना और भक्ति के संदेश के साथ मना रहे हैं। जैसे झंडा और देशभक्ति गीत आज़ादी के प्रतीक हैं, वैसे ही एक भक्त का जीवन सेवा, समर्पण और भक्ति की महक से भरा होता है। सद्गुरु का दिया ब्रह्मज्ञान ही असली आज़ादी है, जो हमें 'मैं' और अहंकार से मुक्त करता है।

जगत माता जी, शहंशाह जी, राजमाता जीए माता साविंदर जी एवं अनेक संतों का जीवन केवल जिक्र के लिए नहीं, बल्कि प्रेरणा और आचरण के लिए है। भक्ति तब सच्ची है जब हम तू कबूल, तो तेरा किया सब कबूल है के भाव में जीते हैं। वर्षों की गिनती से नहीं, समर्पण की गहराई से भक्ति का मूल्य है। मुक्ति का यह पर्व हमें बार-बार चेताता है कि नाम लेकर नहीं, नाम में रमकर ही जीवन सफल होता है।

निसंदेह, इन संतों का तप, त्याग और सेवा आज भी लाखों आत्माओं के जीवन में प्रकाश का कार्य कर रहा है। जीवन की विषम परिस्थितियों में भी इन्होंने ब्रह्मज्ञान की मशाल को जलाए रखा और मिशन का संदेश जन-जन तक अपने जीवन के माध्यम से पहुंचाया। वास्तव में, निरंकारी जगत का हर भक्त उनके ऋण से सदैव अभिभूत रहेगा।

इस पर्व की शुरुआत 15 अगस्त 1964 को जगत माता बुद्धवंती जी की स्मृति में हुई जिसे तब 'जगत माता दिवस' के रूप में आयोजित किया गया। 17 सितम्बर 1969 में बाबा अवतार सिंह जी के ब्रह्मलीन होने पर यह दिवस सन 1970 से 'जगत माता-शहनशाह दिवस' कहलाने लगा। 1979 में प्रथम प्रधान भाई साहब लाभ सिंह जी के ब्रह्मलीन होने पर बाबा गुरबचन सिंह जी ने इसे 'मुक्ति पर्व' नाम दिया। 2018 से माता सविंदर हरदेव जी को भी इस दिन श्रद्धा सुमन अर्पित किये जाते है।

जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री ने संकट की इस घड़ी में उनके साथ खड़े होने के लिए आईसीएआई को धन्यवाद दिया

मुख्य संवाददाता,/सुषमा रानी

भारतीय चार्टर्ड एकाउंटेंट्स संस्थान (आईसीएआई) ने पहलगाम में कश्मीर के लोगों के साथ 79वां स्वतंत्रता दिवस मनाया, सशस्त्र बलों के साथ एकजुटता दिखाई और संकट की इस घड़ी में जम्मू-कश्मीर के नागरिकों के साथ खड़े रहने की अपनी प्रतिबद्धता दोहराई।

इस अवसर पर, आईसीएआई के अध्यक्ष, सीए चरणजोत सिंह नंदा ने कहा, ₹पहलगाम में 79वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर हमारा संदेश स्पष्ट है - आईसीएआई घाटी के साथ एकजुट है। यहाँ हमारी उपस्थिति केवल प्रतीकात्मक नहीं है; यह आशा का प्रमाण है, सामान्य जीवन की वापसी की पुष्टि है और स्थायी शांति एवं साझा समृद्धि के लिए मिलकर काम करने का वादा है। यह परिषद बैठक केवल शासन का एजेंडा नहीं थी, बल्कि साहस, निरंतरता और सामूहिक लचीलेपन की घोषणा थी। अपने सदस्यों और उनके परिवारों को घाटी में लाकर, हम यह दिखाना चाहते थे कि कश्मीर की भावना अडिग है। लेखांकन, शासन सुधारों और आर्थिक पुनरुद्धार में अपनी भूमिका के अलावा, आईसीएआई आतंकवादी ताकतों के खिलाफ मजबूती से खड़ा होने और इस भूमि के सुरक्षित और समृद्ध भविष्य के निर्माण में भागीदार बनने के लिए प्रतिबद्ध है।₹

जम्मू और कश्मीर के लोगों और सशस्त्र बलों के साथ एकजुटता के एक मज़बूत संकेत के रूप में, ICAI ने 12-14 अगस्त, 2025 तक पहलगाम में अपनी 445वीं परिषद बैठक का आयोजन किया। इस आयोजन में 40 से ज़्यादा वरिष्ठ परिषद सदस्य अपने परिवारों के साथ पहलगाम की सेरिन घाटी का दौरा करने के लिए एकत्रित हुए, जिससे 22 अप्रैल की दुखद बैसरन घटना के बाद इस क्षेत्र में उनके विश्वास का पता चलता है। जम्मू और कश्मीर के माननीय मुख्यमंत्री, श्री उमर अब्दुल्ला ने परिषद बैठक में भाग लिया और इस ऐतिहासिक आयोजन के लिए पहलगाम को चुनने के लिए ICAI को हार्दिक धन्यवाद दिया। उन्होंने क्षेत्र में ICAI के विश्वास को स्वीकार करते हुए कहा, ₹आपकी यहाँ उपस्थिति का बहुत महत्व है... यह विश्वास और समर्थन का एक शक्तिशाली संदेश देती है। यह इस स्थान के प्रति आपके विश्वास को दर्शाता है और हमारे लोगों को आश्वस्त करता है कि आगे बेहतर दिन आने वाले हैं।₹

सीए. आईसीएआई के उपाध्यक्ष प्रसन्ना कुमार डी ने कहा, ₹आईसीएआई इस दुखद घटना के बाद अपने पूरे वरिष्ठ नेतृत्व के साथ पहलगाम का दौरा करने वाला पहला संस्थान है। यहाँ स्वतंत्रता दिवस मनाना हमारे लिए गर्व की बात है; यह घाटी के लोगों के प्रति हमारी प्रतिबद्धता और हमारे सशस्त्र बलों के साथ एकजुटता को दर्शाता है।

आईसीएआई ने स्थानीय आजीविका को बढ़ावा देने, वाणिज्य और रोज़मर्रा की खुशियों को पहलगाम में वापस लाने के लिए अपनी प्रतिबद्धता दोहराई। जैसे ही राष्ट्रगान घाटी में गूंजा, संदेश स्पष्ट था; आईसीएआई समुदाय की शक्ति में विश्वास करता है, खासकर कठिन समय में और जम्मू-कश्मीर की जीवनरेखा, आगे बढ़ने के लिए दृढ़ संकल्पित आम नागरिकों का सम्मान करता है।

जीएसटी रिफॉर्म कि प्रधानमंत्री की घोषणा पर व्यापारियों ने किया स्वागत - परमजीत सिंह पम्मा व अध्यक्ष राकेश यादव

मुख्य संवाददाता

दिल्ली : फेडरेशन ऑफ सदर बाजार ट्रेड्स एसोसिएशन चेयरमैन परमजीत सिंह पम्मा व अध्यक्ष राकेश यादव ने माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा ने जीएसटी की मौजूदा दरों की समीक्षा की जाएगी और टैक्स स्लैब को तर्कसंगत बनाया जाएगा। जिससे रोजमर्रा की जरूरत की वस्तुओं पर टैक्स में भारी कमी आएगी। इसको लेकर व्यापारियों ने माननीय प्रधानमंत्री जी की घोषणा का स्वागत किया है।

परमजीत सिंह पम्मा ने कहा छोटे और मध्यम उद्यमों को इन सुधारों से विशेष लाभ होगा, जिससे व्यापार करना आसान होगा और उनकी लागत कम होगी और सस्ती वस्तुओं से बाजार में मांग बढ़ेगी, जिससे देश की अर्थव्यवस्था को नया बल मिलेगा।

पम्मा व अध्यक्ष राकेश यादव ने कहा कि इससे स्वदेशी वस्तुओं सस्ती होगी जिससे आने वाले समय में विदेशी वस्तुओं का दामों में मुकाबला कर पाएंगे क्योंकि कई वस्तुओं में जीएसटी ज्यादा होने के कारण हम उनका मुकाबला नहीं कर पा रहे थे।

पम्मा व अध्यक्ष राकेश यादव ने माननीय प्रधानमंत्री जी को मार्केट के सुधार के लिए भी अपील की जिससे व्यापार और बढ़ सके। जिससे आम लोग मार्केट तक पहुंच सके क्योंकि ऑनलाइन में अधिकतर विदेशी सामान ही बिक रहे हैं। बाजारों में पार्किंग व सड़के ठीक ना होने के कारण लोग मार्केट में नहीं पहुंच पाए। जिसका लाभ ऑनलाइन मार्केट वाले उठा लेते हैं और वह विदेशी वस्तुएं ही लोगों को भेजते रहते हैं। पम्मा ने कहा सरकार को इंडस्ट्री के ऊपर लाइसेंस स्कीम आसान करनी चाहिए और साथ में अफसर शाही पर लगाम लगानी चाहिए, जिससे हमारी इंडस्ट्री धड्डुले से चले क्योंकि डर के माहौल में इंडस्ट्री में काम नहीं हो पता। स्वदेशी को बढ़ावा मिले।

डिजिटल 'पृथ्वी' पर उतरी भगवद गीता, संकट से उबरने का मार्ग दिखाएंगे श्रीकृष्ण के एनिमेटेड अवतार

उद्यमी पृथ्वीराज शेट्टी की भगवद गीता फॉर ऑल नामक स्टार्टअप डिजिटल तकनीक के माध्यम से गीता के ज्ञान को प्रस्तुत करता है। इस ऐप में क्यूआर कोड स्कैन करने पर श्रीकृष्ण के एनिमेटेड अवतार गीता के श्लोकों की व्याख्या करते हैं। जन्माष्टमी पर माई कृष्णा नामक एक AI-आधारित चैटबॉट भी जोड़ा गया है जो गीता के ज्ञान पर आधारित समाधान देता है।

नई दिल्ली। सोचिए, अगर श्रीकृष्ण आज के युग में होते तो क्या वे रथ पर बैठकर गीता का ज्ञान देते या फिर स्मार्टफोन पर एप के जरिए दुनिया से जुड़ते? समय के हिसाब से तो चलना ही होता है। कहते हैं गीता में जीवन की हर मुश्किल का समाधान है।

वैसे भी आज की पीढ़ी को चुटकियों में समाधान चाहिए। ऐसा ही लोगों के लिए श्लोक थेरेपी का काम कर रही है उद्यमी पृथ्वीराज शेट्टी की भगवद गीता फॉर ऑल।

इस स्टार्टअप में हाईटेक भगवद गीता और क्यूआर कोड मिलकर एक ऐसा डिजिटल द्वार खोलते हैं जिसके पार हर श्लोक और उसमें समाहित ज्ञान को जीवन में उतारने का मार्ग स्वयं श्रीकृष्ण सुझाते हैं।

इस भगवद गीता को आधुनिक डिजिटल तकनीक से इस तरह डिजाइन किया गया है कि बड़ों से लेकर बच्चे तक श्रीकृष्ण के ज्ञान को प्रासंगिक तरीके से समझ सकें।

इसे एप के साथ कनेक्ट किया गया है और हर पेज पर क्यूआर कोड स्कैन करते ही गीता के उपदेश पढ़े, देखें और सुने जा सकते हैं। इस टेक मूवमेंट ने गीता को इंटरेक्टिव गुरु बना दिया है, जिससे आप अपनी सहूलियत और समय के मुताबिक कठिन समय में जीवन का मार्ग पा सकते हैं।

हिंदी व अंग्रेजी में मिलेंगे जीवन संदेश

एप आधारित गीता में 18 अध्याय और 700 श्लोक शामिल हैं और कुल 110 से ज्यादा घंटे का कंटेट है। शुरुआत हिंदी, अंग्रेजी और संस्कृत तीनों भाषाओं में श्लोकों से है। इसके बाद क्यूआर स्कैन करते ही वीडियो शुरू होंगे और वाइस ओवर के साथ श्लोक की व्याख्या होगी।

अंत में श्रीकृष्णा के एनिमेटेड अवतार श्लोक के संदेश को जीवन में उतारने का मार्गदर्शन देंगे। वीडियो फार्मेट हिंदी व अंग्रेजी दोनों भाषाओं में उपलब्ध हैं। डेनमार्क के अवार्ड विजेता एनिमेशन स्टूडियो एम-2 ने कृष्णा का एनिमेटेड वर्जन तैयार किया है और इसे इमोशंस कैप्टर

तकनीक के जरिए लाइव बनाया गया है।

एक क्लिक पर हर उलझन का समाधान

बात करते हैं गीता के श्लोकों से समाधान की यानी श्लोक थेरेपी की। एप में एक विकल्प दिया गया है समस्या/विषय अनुसार समाधान खोजें।

मसलन यदि आप जीवन की किसी दुविधा में हैं, घर से दफ्तर तक की किसी परेशानी में हैं और उसके द्वंद्व से निकल नहीं पा रहे हैं तो आप वहां उपलब्ध विकल्प को चुन सकते हैं उसके निदान के रूप में श्लोक पूरे विवरण, उद्धरा के साथ आपके सामने होगा।

स्टार्ट अप के संस्थापक और सीईओ पृथ्वीराज शेट्टी कहते हैं श्लोक थेरेपी की तरह आपके लिए काम करेंगे। मैंने खुद आजमाया है। इस अनोखे एप के होम पेज पर करियर, रिश्ते, चिंता, प्रेम, आत्मविश्वास जैसे अलग-अलग टैब मौजूद हैं।

जिस भी परिस्थिति या टेंशन में आप हों, उस पर क्लिक करते ही श्रीकृष्ण खुद आपको गीता के ज्ञान से समाधान देंगे- सिर्फ सलाह ही नहीं, उससे जुड़े प्रासंगिक श्लोक का अर्थ और भाव भी समझाएंगे। मानो श्रीकृष्ण का व्यक्तिगत मार्गदर्शन हो, जो सेकेंड्स में आपकी सोच को स्पष्ट और मन को शांत कर दे।

जन्माष्टमी पर 'माई कृष्णा' का उपहार

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी से पहले ही एप पर श्रीकृष्ण एक खास उपहार भी एआइ आधारित लेकर आए हैं। एप में एआई आधारित माई कृष्णा चैट बाक्स का जोड़ा गया है।

इसपर कृष्णा के एआइ वर्जन से सवाल पूछ सकते हैं और कृष्णा सखा की तरह श्रीमद्भगवद्गीता के ज्ञान पर आधारित समाधान देंगे। साथ ही एक क्विज सेक्शन है, जहां हर श्लोक पर आधारित बहु विकल्पीय प्रश्नों के जरिए समझ को परख सकेंगे।

गीता का ज्ञान सभी तक पहुंच सके इसके लिए एप और कंटेट पूरी तरह निश्शुल्क है, जबकि ट्रायल के तौर पर शुरुआत के तीन श्लोक के वीडियो निश्शुल्क देख सकेंगे।

ओटीटी से आया गीता के टेक वर्जन का विचार

लंदन और न्यूयार्क में पढ़ाई के बाद एक करोड़ से ज्यादा का पैकेज छोड़कर गीता के ज्ञान को इस नए माध्यम से लोगों तक पहुंचाने वाले पृथ्वीराज बताते हैं कि कई सफल उद्यमियों से मिलकर जाना कि लोग सफल हैं, लेकिन खुश नहीं है।

गीता में हर चिंता का समाधान है, लोग घरों में रखते हैं लेकिन पढ़ नहीं पाते। विचार आया कि गीता को तकनीक की मदद से ओटीटी की तरह उपलब्ध कराया जाए। इसके बाद तीन साल इसपर रिसर्च और काम के बाद लांच किया है।

इसे अंबानी परिवार और सुनील भारती मित्तल से लेकर फिल्म अभिनेता, सुनील शेट्टी, विद्युत जामवाल तक इस एप के माध्यम से गीता ज्ञान ले रहे हैं, हाल ही में मुंबई में फिल्म अभिनेता सुनील शेट्टी ने इसे लांच किया था।

आज 79वे स्वतन्त्रा दिवस के कार्यक्रम मे झज्जर मे राज्य सभा सांसद श्री रामचन्द्र जागडा से प्रासससनिक 15अगस्त वा 26जनवरी के कार्यक्रमो मे 19वी बार सम्मानित होते निरक्षक सतीश कुमार ईन्चार्ज सड़क सुरक्षा वा समुदाईक पुलिसीग शाखा झज्जर वा नशा मुक्ति शाखा बहादुरगढ

बदायूं पशु प्रेमी विकेंद्र शर्मा की शिकायत के बाद वन विभाग से रेंजर विकास वरुण के दिशा निर्देशन में वन दरोगा अशोक कुमार ने मोहन सिंघ, मथुरा सिंह और भुवन बेलवाल के साथ सदर बाजार में दुकानों से भारी मात्रा में मोरपँख जब्त किये, साथ ही भविष्य में मोरपंखो को ना बेचने की हिदायत दी।

नन्दू भइया ने की करणी सेना द्वारा आयोजित तिरंगा यात्रा में सहभागिता

परिवहन विशेष न्यूज

आज स्वतंत्रता दिवस के पावन अवसर पर नन्द किशोर चौहान (नन्दू भइया) ने करणी सेना जनपद बरेली के जिलाध्यक्ष कौशल सिंह द्वारा आयोजित तिरंगा यात्रा में सहभागिता की जिसमें तमाम संख्या में करणी सेना के कार्यकर्ताओं के साथ साथ अत्यधिक संख्या में आसपास के लोग एवं मातृ शक्ति भी उपस्थित रहीं तिरंगा यात्रा करणी सेना जनपद बरेली के कार्यालय रघुकुल धाम चौबारी से प्रारम्भ होकर ग्राम पंचायत चौबारी में भ्रमण करते हुए बुखारा मोड़, लाल फाटक, वीरांगना चौक, बी आई बाजार, चौकी चौराहा से चौपला चौराहा होते हुए करगैना, रामगंगा होकर अपने कार्यालय रघुकुल धाम चौबारी पर आकर समाप्त हुई यात्रा में अंकित चौहान, अरुण चौहान, गौरब सिंह, अंशुल चौहान, धर्मवीर सिंह, प्रमोद सिंह कठेरिया, पंकज सिंह आदि एवं थाना कैन्ट के स्टाफ का विशेष सहयोग रहा यात्रा के समापन पर जिलाध्यक्ष द्वारा पधारे हुए समस्त आगंतुकों महानुभावों का हृदय से धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया गया।

भरी अदालत में जज पर फेंके चावल और... काला जादू समझ डर गए वकील, डॉक्टर को मिली अनोखी सजा

दिल्ली के तीस हजारी कोर्ट में एक डॉक्टर को अदालत की कार्यवाही में बाधा डालने के आरोप में सजा सुनाई गई। डॉक्टर ने कोर्ट रूम में चावल फेंके जिससे कार्यवाही बाधित हुई। न्यायाधीश ने इसे अनुशासनहीनता माना और आरोपी को कोर्ट उठने तक कारावास और जुर्माना लगाया। पहले भी कोर्ट रूम में चावल बिखरे मिलने की घटना सामने आई थी जिसके बाद अधिवक्ताओं में हिचकिचाहट थी।

नई दिल्ली। दिल्ली में तीस हजारी स्थित विशेष न्यायाधीश की अदालत ने एक डॉक्टर पर कोर्ट की कार्यवाही में बाधा डालने के आरोप में कोर्ट उठने तक कारावास और दो हजार रुपये का जुर्माना लगाया।

आरोपी ने अदालत कक्ष में चावल फेंके, जिसे वहां मौजूद अधिवक्ताओं ने काला जादू करने की कोशिश माना। विशेष न्यायाधीश शेफाली बरनाला टंडन ने आदेश में कहा कि आरोपी की हरकत से 15 से 20 मिनट तक कार्यवाही ठप रही। न्यायाधीश ने कहा कोर्ट रूम वह स्थान है, जहां न्याय की अपेक्षा होती है। यहां अनुशासन और गरिमा बनाए रखना अनिवार्य है। इस मामले में हेड कॉन्स्टेबल और अधिवक्ताओं ने अदालत को बताया कि आरोपी डा. चंदर विभास ने न्यायाधीश के आसन के पास फर्श पर चावल फेंके। पूछताछ में डॉक्टर ने दावा किया कि चावल उनके हाथ से गलती से गिर गए, लेकिन वह यह नहीं बता सके कि अदालत में चावल क्यों लाए थे। वहीं, स्टाफ ने यह भी बताया कि पहले भी एक मौके पर, जब न्यायाधीश छुट्टी पर थी, कोर्ट रूम में चावल बिखरे मिले थे। इस घटना के बाद अधिवक्ता न्यायाधीश के आसन के पास जाने में हिचकिचाने लगे हैं।

79 वाँ सवतंत्रता दिवस 15 अगस्त 2025 का आगाज़ - ट्रंप को संदेश ,आरएसएस का जिक्र, रोजगार योजना ,आत्मनिर्भरता , मेड इन इंडिया ,नक्सलवाद और अवैध घुसपैठियों को सन्देश

राष्ट्रीय ध्वज फहराने और राष्ट्रगान के साथ पूरे देश में एक स्वर में 'भारत माता की जय' और 'वंदे मातरम्' के जयघोष गूँज उठे 79 वाँ स्वतंत्रता दिवस केवल एक उत्सव नहीं बल्कि भारत की उपलब्धियों चुनौतियों व भविष्य की योजनाओं का प्रतीक बनकर उभरा

-एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर भारतीय स्वतंत्रता दिवस15 अगस्त2025 पर पूरे विश्व के सैलानियों भारतीय उत्सवों पर रुचि रखने वालों स्वतंत्रता का मूल्य जानने वालों विदेश में बेस मूल भारतीयों सहित,पूरे भारतवर्ष ने 79 वाँ स्वतंत्रता दिवस अपार उत्साह, जोश और देशभक्ति की भावना के साथ मनाया। तड़के सुबह से ही देश के हर कोने में तिरंगे की शोभा देखते ही बन रही थी,चाहे वह महानगरों की ऊँची-ऊँची इमारतें हों, गांवों की गलियाँ हों या फिर स्कूल-कॉलेजों के प्रांगण ।दिल्ली के लाल किले से पीएम द्वारा राष्ट्रीय ध्वज फहराने और राष्ट्रगान के साथ पूरे देश में एक स्वर में 'भारत माता की जय' और 'वंदे मातरम्' के जयघोष गूँज उठे। राजधानी से लेकर सीमावर्ती क्षेत्रों तक सुरक्षा बलों की परेड, सांस्कृतिक झाँकियों और देश की प्रगति की झलक दिखाते आयोजनों ने उत्सव को भव्य बना दिया। शहरों में सजावट रोशनी और झंडारोहण समारोह ने वातावरण को देशभक्ति के रंग में रंग दिया। स्कूलों और कॉलेजों में बच्चों ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए, जिसमें स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास, शहीदों के बलिदान और आज़ादी के महत्व को जीवंत किया गया। विभिन्न राज्यों में पारंपरिक नृत्यों, संगीत और झाँकियों के माध्यम से भारत की सांस्कृतिक विविधता को प्रदर्शित किया गया। ग्रामीण इलाकों में भी ग्राम पंचायतों, स्थानीय क्लबों और स्वयंसेवी संस्थाओं ने ध्वजारोहण कर देशप्रेम का संदेश दिया ।सेना, नौसेना और वायुसेना ने अपने- अपने ठिकानों पर गरिमामय समारोह आयोजित किए, जिनमें युद्धक उपकरणों,विमाननकौशल और अनुशासन की अद्भुत मिसाल पेश की गई। स्वतंत्रता दिवस पर विभिन्न राज्यों के राजभवनों में राज्यपालों ने ध्वजारोहण किया और नागरिकों को राष्ट्र की एकता,अखंडता और विकास के लिए मिलकर कार्य करने का आह्वान किया ।कई शहरों में तिरंगा यात्राएँ निकाली गईं, जिनमें आम नागरिक, विद्यार्थी,व्यापारी और सामाजिक संगठन एक साथ शामिल हुए। शाम होते-होते ऐतिहासिक इमारतों और स्मारकों पर तिरंगे के रंगों से जगमगाती रोशनी ने पूरे देश को मानो एक धागे में बाँध दिया। इस वर्ष स्वतंत्रता दिवस का आयोजन केवल परंपरा तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह देश की नई ऊर्जा, आत्मनिर्भरता और वैश्विक नेतृत्व की ओर बढ़ते कदमों का प्रतीक बन गया। भारत के हर नागरिक ने, चाहे वह देश में हो या विदेश में, इस दिन को गर्व और सम्मान के साथ मनाया,और यह संकल्प लिया कि आने वाले वर्षों मेंभारत को और अधिक सशक्त, समृद्ध और सुरक्षित बनाने में अपना योगदान देंगे ।इस साल का थीम 'नया भारत' है, समारोह की एक खास परंपरा यह रही कि यह प्रधानमंत्री का लगातार 12वीं बार लाल किले से भाषण था, जिसके चलते वे इंदिरा गांधी का रिकॉर्ड पीछे छोड़ते हुए इस विशेष श्रेणी में नेहरू के बाद दूसरे स्थान पर आ गए।

साथियों बात अगर हम लाल किले की प्राचीर से भारतीय पीएम के संबोधन रूपी हुंकार की करें तो,79वें स्वतंत्रता दिवस पर पीएम ने लालकिले पर लगातार 12 वीं बार तिरंगा फहराया। इस दौरान उन्होंने अब तक का सबसे लंबा भाषण दिया ।पीएम ने 103 मिनट के भाषण की शुरुआत ऑपरेशन सिंदूर से की। इस पर 13 मिनट से ज्यादा बोले, टैरिफ का बिना नाम लिए ट्रम्प को संदेशदिया 'भारत के किसान,पशुपालक, मछुआरे, हमारी सबसे बड़ी प्राथमिकता हैं। इससे जुड़ी किसी भी अहितकारी नीति के आगे मोदी दीवार बनकर खड़ा है ।भारत, अपने किसानों, पशुपालकों, मछुआरों के संबंध में कभी भी कोई समझौता नहीं स्वीकार करेगा।'पीएम का यह बयान ऐसे समय में आया है अमेरिका और भारत के बीच एक द्विपक्षीय व्यापार समझौता (बीटीए) पर बातचीत हो रही है। इसमें अमेरिका चाहता है कि भारत कृषि और डेयरी सेक्टर में टैक्स कम करे।साथ ही मक्का, सोयाबीन, सेब, बादाम, एथेनॉल जैसे सामान पर टैरिफ कम करने और अमेरिकी डेयरी उत्पादों को भारत में ज्यादा बेचने कीअनुमति दे ।12 साल में पहली बार लाल किले से आरएसएस का जिक्र हुआ,आज गर्व के साथ मैं इस बात का जिक्र करना चाहता हूं कि आज से 100 साल पहले एक संगठन का जन्म हुआ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ।100 साल की राष्ट्र की सेवा बहुत ही गौरवपूर्ण है ।व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण के संकल्प को लेकर 100 साल मां भारती के कल्याण का लक्ष्य लेकर मातृभूमि के लिए अपना जीवन समर्पित किया, सेवा, समर्पण संगठन और अप्रतिम अनुशासन जिसकी पहचान रही है। ऐसा आरएसएस दुनिया का सबसे बड़ा एनजीओ है ।उन्होंने आतंकवाद, सिंधु समझौता, आत्मनिर्भरता, मेड इन इंडिया, नक्सलवाद और अवैध घुसपैठियों पर अपनी बात रखी। उन्होंने पहली बार लाल किले से आरएसएस का जिक्र किया ।पीएम ने कहा,'ऑपरेशन सिंदूर में सेना ने वो करके दिखाया, जो दशकों तक भुला नहीं सकते। सैकड़ों किमी दुश्मन की धरती में घुसकर आतंकियों को नेस्तनाबूद किया। पाकिस्तान की नींद अभी तक उड़ी है ।अगर हम आत्मनिर्भर न होते, तो क्या ऑपरेशन सिंदूर इतनी तेजी से कर पाते। इसी कारण दुश्मन को पता भी नहीं चला कि कौनसा हथियार उन्हें खत्म कर रहा, उन्होंने दो ऐलान किए जीएसटी घटेगा, आज से रोजगार वाली नई योजना (1)जीएसटी रिफॉर्मः इस दिवाली पर सरकारजीएसटी रिफॉर्म ला रही है। इससे आम लोगों को टैक्स में बड़ी राहत मिलेगी।(2)23.5 करोड़ नौजवानों को रोजगारःआज से प्रधानमंत्री विकसित भारत रोजगार योजना लागू की जा रही है। इस योजना के

तहत निजी क्षेत्र में पहली नौकरी पाने वाले बेटे-बेटी को 15 हजार रुपए सरकार की तरफ से दिए जाएंगे। कंपनियों को भी जो ज्यादा रोजगार जुटाएगा, उन्हें प्रोत्साहन राशि दी जाएगी। यह योजना करीब 3.5 करोड़ नौजवानों के लिए रोजगार के अवसर बनाएगी।

साथियों बात अगर हम 79 में स्वतंत्रता दिवस के लाल किला समारोह में आमंत्रित को की करें तो85 गांवों के सरपंच हुए विशेष मेहमान,इस साल समारोह में 26 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के 85 गांवों के 210 सरपंचों को विशेष अतिथि के रूप में बुलाया गया था जो रेखांकित करने वाली बात है।

साथियों बात अगर हम 79 वाँ स्वतंत्रता दिवस वैश्विक स्तरपर मूल भारतीयों द्वारा मनाए जाने की करें तो, यूएसए में भारतीय समुदाय, विशेषकर ब्रॉवर्ड सेंटर, में सांस्कृतिक प्रस्तुतियों, संगीत और खान-पान के कार्यक्रम आयोजित किए गए, साथ ही कई भारतीय रेस्तरां ऑफर्स भी पेश कर रहे थे ।इसी दौरान, सिंगापुर और स्लोवाकिया के राजनयिकों ने सोशल मीडिया के माध्यम से भारत को स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएँ भेजीं, सिंगापुर के उच्चायुक्त ने "हैप्पी 79 वाँ इंडिपेंडेंस डे" की बधाई दी, वहीं स्लोवाकिया के राजदूत ने समृद्धि, शांति और सौभाग्य की शुभकामनाएँ प्रेषित कीं ।सिंगापुर के उच्चायुक्त ने "हमारी दोस्ती और 60-वर्षीय द्विपक्षीय संबंधों की मजबूती की आशा" व्यक्त की, जबकि राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने द्विपक्षीय सहयोग और भारत-सिंगापुर साझेदारी पर प्रकाश डाला ।इन उत्सवों ने यह साबित कर दिया कि भारतीय स्वतंत्रता दिवस केवल भारत तक सीमित नहीं है, बल्कि यह दुनिया भर में फैले भारतीयों के गर्व, पहचान और एकता का वैश्विक उत्सव बन चुका है। तिरंगे की छांव में, चाहे न्यूयॉर्क की भीड़ हो या लंदन का स्क्वायर, पेरिस की नदी हो या बर्लिन की ऐतिहासिक दीवार—हर जगह भारत की आत्मा और उसके स्वतंत्र होने का जश्न गूंजता लगातार रहा।

साथियों बात अगर हम देश के कोने-कोने में आजादी व देशभक्ति की की लहर की करें तो देशभर में सुबह से ही स्कूलों, कॉलेजों, सरकारी और निजी संस्थानों में ध्वजारोहण के कार्यक्रम आयोजित हुए ।बच्चों ने देशभक्ति गीत गाए, रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दीं, और आज़ादी के मतवालों की कहानियों पर नाटक प्रस्तुत किए। गली-गली और गाँव-गाँव में घरों की छतों पर तिरंगे लहराते दिखाई दिए। बाज़ारों में मिठाइयों की महक और सजावट की रौनक देखते ही बनती थी। सोशल मीडिया प्लेटफार्म भी तिरंगे के रंगों में रंगा हुआ था, जहाँ लोग स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएँ साझा कर रहे थे।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि 79 वाँ सवतंत्रता दिवस 15 अगस्त 2025 का आगाज़-ट्रंप को संदेश, आरएसएस का जिक्र रोजगार योजना आत्मनिर्भरता, मेड इन इंडिया, नक्सलवाद और अवैध घुसपैठियों को सन्देश, राष्ट्रीय ध्वज फहराने और राष्ट्रगान के साथ पूरे देश में एक स्वर में 'भारत माता की जय' और 'वंदे मातरम्' के जयघोष गूँज उठे, 79 वाँ स्वतंत्रता दिवस केवल एक उत्सव नहीं बल्कि भारत की उपलब्धियों चुनौतियों व भविष्य की योजनाओं का प्रतीक बनकर उभरा।

हमेशा के लिए बंद होने वाला है इस एसयूवी का प्रोडक्शन, 2002 में पहली बार हुई थी लॉन्च, पोर्श-ऑडी ने मिलकर...

वोक्सवैगन जल्द ही अपनी पॉपुलर फ्लैगशिप SUV Touareg का प्रोडक्शन बंद करने की योजना बना रही है। 2002 में लॉन्च हुई इस SUV की तीन जनरेशन आ चुकी हैं। इसे Volkswagen Porsche और Audi ने मिलकर बनाया था। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक यूरोप में लागत को लेकर बदलाव के कारण 2026 तक इसका प्रोडक्शन पूरी तरह बंद हो जाएगा। भारत में इसका सफर 2009 में शुरू हुआ था।

नई दिल्ली। वोक्सवैगन जल्द ही अपनी पॉपुलर फ्लैगशिप SUV Touareg के प्रोडक्शन को बंद करने की तैयारी कर रही है। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, इसके प्रोडक्शन को साल 2026 तक पूरी तरह से बंद कर दिया जाएगा। इसे साल 2002 में पहली बार लॉन्च किया गया था। तब से लेकर अभी तक इसकी तीन जनरेशन को लाया जा चुका है। इसे Volkswagen, Porsche और Audi ने मिलकर तैयार किया था। आइए विस्तार में जानते हैं कि Volkswagen Touareg को किन खास फीचर्स के साथ ऑफर किया जाता रहा है?

Touareg का इतिहास और खासियत

Volkswagen Touareg को पहली बार 2002 में लॉन्च किया गया था। इसे Volkswagen, Porsche और Audi ने मिलकर तैयार किया था। इसे Cayenne और Q7 के प्लेटफॉर्म पर डेवलप किया गया था। Touareg को पावरफुल इंजन के साथ लेकर आया गया था। इसे दो पावरफुल इंजन ऑप्शन के साथ लेकर आया गया था। इसका 5.0-लीटर डीजल V10 इंजन 350hp की पावर और 850Nm का टॉर्क जनरेट करता है और 6.0-लीटर पेट्रोल W12 इंजन 450hp की पावर और 600Nm का टॉर्क जनरेट करता है।

Touareg क्यों बंद हो रही है?

एक रिपोर्ट के मुताबिक, Touareg को बंद करने का निर्णय यूरोप में अधिक लागत-सचेत, मास-मार्केट वाहन लाइन-अप बनाने की ओर Volkswagen के ध्यान में बदलाव का हिस्सा है। अभी तक यह जानकारी सामने नहीं आई है कि इसकी जगह पर कोई दूसरी SUV कंपनी लेकर आने वाली है, जिसका मतलब हो सकता है कि इस प्रीमियम एसयूवी को 24 साल के प्रोडक्शन के बाद रिटायर किया जा सकता है।

Touareg के बाहर होने के बाद, Volkswagen Tayron कार निर्माता की यूरोप और अन्य प्रमुख बाजारों के लिए सबसे बड़ी एसयूवी होगी। 2023 के अंत में पेश की गई, Tayron दो- और तीन-रो सीटिंग कॉन्फिगरेशन में आती है और इसे मौजूदा पीढ़ी के Touareg, जिसे 2018 में लेकर आया गया था उसकी तुलना में एक ज्यादा आधुनिक प्लेटफॉर्म पर बनाया गया है। Volkswagen 2025 के अंत तक भारत में भी Tayron को लॉन्च करने की योजना बना रही है।

भारत में Volkswagen Touareg का सफर

Volkswagen ने भारत में पहली पीढ़ी की Touareg को 2009 में लॉन्च किया था, जिसकी कीमत डीजल V6 इंजन के लिए 51.85 लाख रुपये थी। इस लाइन-अप में बाद में डीजल V8 और V10 पावरप्लांट भी जोड़े गए और 2012 में दूसरी पीढ़ी की Touareg ने इसकी जगह ली। भारत में दूसरी पीढ़ी की Touareg की कीमतें 58.5 लाख रुपये से शुरू हुईं, और इसे डीजल और पेट्रोल V6 इंजनों के साथ पेश किया गया था। 2019 में तीसरी पीढ़ी की Touareg के भारत में लॉन्च की बात चली, लेकिन Volkswagen ने इसे भारतीय बाजार में नहीं लेकर आई।

वैगन आर दुनिया में सबसे ज्यादा बिकने वाली गाड़ियों की लिस्ट में शामिल, 1 करोड़ का आंकड़ा

परिवहन विशेष न्यूज

मारुति सुजुकी वैगनआर ने वैश्विक बाजार में एक करोड़ से ज्यादा मॉडलों की बिक्री का आंकड़ा पार कर लिया है। WagonR को पहली बार जापान में 1993 में लॉन्च किया गया था। भारतीय बाजार में इसे 1999 में पेश किया गया था। WagonR की टॉल-बॉय स्टाइलिंग और बेहतर माइलेज ने इसे भारतीय परिवारों के बीच लोकप्रिय बना दिया। इसकी बिक्री में भारत का सबसे बड़ा योगदान रहा है।

नई दिल्ली। मारुति सुजुकी वैगनआर दुनियाभर में सबसे पॉपुलर मॉडलों में से एक है। इसके साथ ही यह अब यह ग्लोबल बाजार में सबसे ज्यादा बिकने वाले वाली गाड़ियों की लिस्ट में भी शामिल हो गई है। हाल ही में WagonR ने ग्लोबल बाजार में एक करोड़ से ज्यादा मॉडल की बिक्री के आंकड़े को पार किया है, जो बड़ी उपलब्धि है। WagonR को सबसे पहले जापान में सितंबर 1993 में लॉन्च किया गया था, इस मुकाम को लॉन्च होने के 31 साल और नौ महीने के बाद इस आंकड़े को पार किया है।

WagonR की ग्लोबल बिक्री में 1 करोड़ का आंकड़ा पार

Suzuki WagonR ने भारतीय बाजार में 1999 में लॉन्च किया गया था, इसके भारत आने से पहले इसकी बिक्री एशियाई और यूरोपीय बाजारों में की जा रही थी, जिसने इसे खुले हाथों से स्वीकार किया और इसकी बिक्री तेजी से होने लगी। इस हैचबैक हैचबैक का उत्पादन हंगरी और इंडोनेशिया में भी होता है, और इसे दुनिया भर के 75 से अधिक देशों में बेचा गया है।

WagonR की बिक्री में भारत का सबसे बड़ा योगदान

WagonR की टॉल-बॉय स्टाइलिंग की वजह से इसमें बड़ी केबिन दी जाती है, जो बढ़ते भारतीय परिवारों के लिए काफी बेहतरीन रहा। इसे भारतीय बाजार में 1.1-लीटर इंजन के साथ ऑफर किया जाता है, जिसे बेहतर माइलेज के लिए जाना जाता है। वहीं, 2019 में पेश किए गए नए जनरेशन के वर्जन में 1.0-लीटर और 1.2-लीटर स्वाभाविक रूप से एस्पिरेटेड इंजन ऑप्शन को लेकर आया गया, जिसमें पहले से ज्यादा केबिन स्पेस दिया गया। साथ ही इसे CNG इंजन के साथ लाया गया है, जिसकी वजह से इसकी बिक्री पहले से ज्यादा बढ़ गई।

WagonR की बिक्री का एक बड़ा हिस्सा भारतीय बाजार से आता है। यह देश में सबसे ज्यादा बिकने वाली कारों में से एक है। इस हैचबैक ने पिछले साल भारत में 25 साल पूरे किए थे और उस समय 32 लाख यूनिट की बिक्री का आंकड़ा पार कर लिया था।

एक साथ कावासाकी की चार सुपरस्पोर्ट बाइक हुई अपडेट, नए चमचमाते कलर मिले

कावासाकी ने निंजा ZX-6R और निंजा 650 को नए रंग विकल्पों के साथ अपडेट किया है। ZX-6R में 636cc का इंजन है जो 127hp की पावर देता है जबकि निंजा 650 में 649cc का इंजन है जो 67hp की पावर देता है। निंजा 500 और निंजा ZX-4RR को भी नए रंग विकल्प मिले हैं। ये अपडेटेड मॉडल 2026 के लिए हैं।

नई दिल्ली। कावासाकी ने हाल ही में ग्लोबल बाजार में अपने कई मॉडलों के 2026 वर्जन के लिए नए कलर को पेश कर चुकी है, जिसमें Kawasaki Versys 1100 S और SE शामिल है। अब कंपनी ने इन्हीं दोनों बाइक की तरह ही मिड-कैपेसिटी सुपरस्पोर्ट मोटरसाइकिल Ninja ZX-6R और Ninja 650 को नए कलर ऑप्शन के साथ अपेडट किया है। आइए जानते हैं कि इन दोनों बाइक को कौन-से नए कलर ऑप्शन दिए गए हैं?

Kawasaki Ninja ZX-6R में क्या है नया?

ग्लोबल बाजार में Kawasaki Ninja ZX-6R को मैटेलिक मैट ग्रेफेनेस्टील ग्रे/मैटेलिक स्पार्क ब्लैक/लाइम ग्रीन कलर दिया गया है। इसके साथ ही इस मोटरसाइकिल को लाइम ग्रीन लिवरी का एक अपडेटेड वर्जन भी मिला है।

Ninja ZX-6R कावासाकी की WorldSSP रेसिंग टीम के लिए बेस मॉडल है। इसमें 636 cc इन-लाइन फोर-सिलेंडर लिक्विड-कूल्ड इंजन का इस्तेमाल किया गया है। यह इंजन 127 hp की पावर और 69 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। बाइक से निकलने वाले पावर को कंट्रोल करने का काम सामने 310 डुअल सेमी-फ्लोटिंग डिस्क और पिछले हिस्से में 220 मिमी सिंगल डिस्क करते हैं।

2026 Kawasaki Ninja 650 को क्या मिला?

कावासाकी की इस मिड-कैपेसिटी सुपरस्पोर्ट बाइक को दो नए कलर ऑपर्न दिए गए हैं, जिसमें मैटेलिक मैट ग्रेफेनेस्टील ग्रे/मैटेलिक फ्लैट स्पार्क ब्लैक शामिल है। इसके साथ ही एक लाइम ग्रीन वर्जन भी दिया गया है। ZX-6R के विपरीत Ninja 650 में एक पैरेलल-ट्विन इंजन का इस्तेमाल किया गया है। इसमें 649 cc का लिक्विड-कूल्ड इंजन मिलता है, जो 67 hp की पावर और 64 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसके इंजन को 6-स्पीड ट्रांसमिशन के साथ जोड़ा गया है।

इन्हें भी मिले नए कलर

Ninja ZX-6R और Ninja 650 के साथ ही Ninja 500 को भी नए कलर ऑप्शन दिए गए हैं। इसमें मैटेलिक फ्लैट स्पार्क ब्लैक/मैटेलिक स्पार्क ब्लैक कॉम्बिनेशन दिया गया है, जबकि SE मॉडल को लाइम ग्रीन और मैटेलिक मैट ट्वाइलाइट ब्लू/कैंडी पर्सिमोन रेड कलर में लेकर आया गया है। वहीं, Ninja ZX-4RR को भी MY26 के लिए नए कलर दिए गए हैं, जिसमें लाइम ग्रीन और मैटेलिक मैट ग्रेफेनेस्टील ग्रे/मैटेलिक स्पार्क ब्लैक शामिल है।

2026 तक हीरो लॉन्च करेगी कई बाइक और स्कूटर, लिस्ट में पेट्रोल और इलेक्ट्रिक व्हीकल शामिल

हीरो मोटोकॉर्प 2026 तक भारतीय बाजार में नए स्कूटर और मोटरसाइकिल लॉन्च करेगी जिसमें 125cc सेगमेंट पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। कंपनी पेट्रोल और इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहनों के साथ-साथ Harley-Davidson के साथ प्रीमियम बाइक भी लाएगी। Vida सब-ब्रांड का विस्तार होगा और Harley Davidson के साथ मिलकर दूसरी 440cc प्लेटफॉर्म पर बेस्ड मोटरसाइकिल लॉन्च की जाएगी। इसका उद्देश्य होंडा से प्रतिस्पर्धा का सामना करना है।

नई दिल्ली। हीरो मोटोकॉर्प साल 2026 तक भारतीय बादार में कई नए प्रोडक्ट को लॉन्च करने की तैयारी कर रही है। कंपनी अपने आगामी मॉडलों को ग्राहकों को जरूरतों और मांग के आधार पर कई सेगमेंट में अपने स्कूटर और मोटरसाइकिल को लेकर आने वाली है। कंपनी पेट्रोल के साथ ही इलेक्ट्रिक टू-व्हीलर तक लाने की तैयारी कर रही है। इसके साथ ही Harley-Davidson के साथ पार्टनरशि में प्रीमियम दोपहिया भी लाने की तैयारी कर रही है।

पेट्रोल सेगमेंट में नए मॉडल

कंपनी पेट्रोल कैटेगरी में ज्यादा प्रतिस्पर्धी 125 cc सेगमेंट पर अपना ध्यान केंद्रित करेगा। कंपनी इस तिमाही में कई प्रोडक्ट को लॉन्च करने की तैयारी कर रही है। कंपनी की तरफ से हाल में 125 cc सेगमेंट में Xtreme 125cc R, Glamour, Super Splendor XTec और Glamour XTech जैसी मोटरसाइकिल को पेश करती है। वहीं, हाल ही में Glamour के अपडेटेड वर्जन पर काम कर रही है, जिसे जल्द ही भारत में लॉन्च किया जा सकता है।

प्रीमियम और इलेक्ट्रिक वाहन

कंपनी अपने सब-ब्रांड Vida के पोर्टफोलियो को बढ़ाने पर काम कर रहा है। इसके नए वेरिएंट को जल्द लॉन्च किया जा सकता है। इसके साथ ही कंपनी Harley Davidson के साथ मिलकर बनाई गई अपनी दूसरी मोटरसाइकिल को लॉन्च करने की तैयारी कर रही है। यह नया मॉडल भी 440 cc प्लेटफॉर्म पर बेस्ड होगा, जो हाल ही में बंद हुई Hero Mavrick 440 और Harley Davidson X440 को आधार बनाता है।

यह अपडेट ऐसे समय में आया है जब Hero MotoCorp की घरेलू टू-व्हीलर बाजार में अग्रणी स्थिति को पिछले महीने, जुलाई 2025 में Honda Motorcycle & Scooter India (HMSI) के पीछे दूसरे स्थान पर आने के कारण पीछे छोड़ दिया गया था। नए मॉडलों को लॉन्च करने से कंपनी को बढ़ती प्रतिस्पर्धा से निपटने में मदद मिलने की उम्मीद है, साथ ही नए सेगमेंट पर भी ध्यान केंद्रित किया जाएगा।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और स्वतंत्रता आंदोलन

लोकेन्द्र सिंह राजपूत

संघ के स्वयंसेवकों ने 1942 के 'अंग्रेजो, भारत छोड़ो' आंदोलन में भी सहभागिता की। 8 अगस्त, 1942 को मुंबई के गोवलिया टैंक मैदान पर कांग्रेस अधिवेशन में महात्मा गांधीजी ने आंदोलन की घोषणा की। दूसरे दिन से ही देशभर में आंदोलन प्रारंभ हो गया।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक के बारे में अज्ञानता से घिरे लोग अक्सर यह प्रश्न पूछते हैं कि स्वतंत्रता आंदोलन में संघ की क्या भूमिका रही है? कुछ लोग इससे भी आगे बढ़ जाते हैं और पूछते हैं कि संघ के किसी एक कार्यकर्ता का नाम ही बता दीजिए, जिसने स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया हो? संघ की स्थापना जिन्होंने की, वे डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार स्वयं ही जन्मजात देशभक्त थे। डॉ. हेडगेवार क्रांतिकारी भी रहे, कांग्रेस में रहकर राजनीतिक संघर्ष किया और जेल भी गए। बाद में, देश की सर्वांग स्वतंत्रता और स्वतंत्रता को स्थायी बनाने के उद्देश्य से उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की। डॉ. हेडगेवार अकेले नहीं हैं, अपितु स्वतंत्रता आंदोलन में हिस्सा लेनेवाले संघ के ज्ञात-अज्ञात कार्यकर्ताओं की लंबी श्रृंखला है। जो संगठन अपने कार्यकर्ताओं को यह शपथ दिलाता हो कि "मैं हिन्दूराष्ट्र को स्वतंत्र कराने के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का घटक बना हूँ", उसने कितने ही लोगों के मन में स्वतंत्रता प्राप्ति का भाव भरा होगा, उसकी सहज कल्पना की जा सकती है।

भारत में प्रतिज्ञा का बहुत महत्व है। हमें भीष्म प्रतिज्ञा का स्मरण है। राजा हरिश्चंद्र की सत्य बोलने की प्रतिज्ञा ध्यान है। मुगलिया सल्तनत के अत्याचार के विरुद्ध महाराणा प्रताप की प्रतिज्ञा को कौन भूल सकता है। छत्रपति शिवाजी महाराज ने शिव को साक्षी मानकर प्रतिज्ञा करके 'स्वराज्य' की नींव रखी, जिसे साकार करने में संपूर्ण समाज प्राणपण से जुट गया। संघ के स्वयंसेवक भी इसी भाव के साथ प्रतिज्ञाबद्ध होते हैं कि वह जो प्रतिज्ञा ले रहे हैं, उसको पूर्ण करने में अपना सर्वस्व देंगे और प्रतिज्ञा को आजन्म निभाएंगे। मार्च 1928 में नागपुर के निकट एक पहाड़ी पर स्वयंसेवकों को एकत्र करके, भगवाध्वज के समक्ष प्रतिज्ञा का पहला कार्यक्रम सम्पन्न कराया गया था। देश की पूर्ण स्वतंत्रता एवं विकास के लिए स्वयंसेवकों को वीरव्रती बनाने के निमित्त आयोजित इस प्रथम कार्यक्रम में 99 स्वयंसेवकों ने प्रतिज्ञा की थी। इस अवसर पर डॉ. हेडगेवार ने संघ के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए, जो भाषण दिया, वह स्वतंत्रता प्राप्ति की संघ की आकांक्षा को स्पष्टतौर पर व्यक्त करता है। उन्होंने कहा- "हमारा उद्देश्य हिन्दू राष्ट्र की पूर्ण स्वाधीनता है। संघ का निर्माण इसी महान लक्ष्य के लिए हुआ है"। इस स्पष्ट अभिव्यक्ति के बाद कहने के लिए कुछ और भी बचता है क्या? यह भी समझना होगा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ता अपनी नित्य प्रार्थना में कहते हैं कि इस राष्ट्र को परम वैभव पर लेकर जाना है। क्या कोई पराधीन राष्ट्र परम वैभव पर जा सकता है? स्पष्ट है कि भारत की स्वतंत्रता का लक्ष्य संघ की स्थापना में निहित था।

डॉक्टर साहब ने 1929 में वर्धा में आयोजित प्रशिक्षण वर्ग में भी स्वयंसेवकों एवं नागरिकों की एक सभा में प्रखरता के साथ कहा- "ब्रिटेन की सरकार ने अनेक बार भारत को स्वतंत्र करने का आश्वासन दिया है, परंतु वह झूठा साबित हुआ। अब यह साफ हो गया कि भारत अपने बल पर स्वतंत्रता प्राप्त करेगा"। याद रहे कि डॉ. हेडगेवार ने महात्मा गांधी के आह्वान पर 'नमक सत्याग्रह' में शामिल होकर विदर्भ प्रांत में 1930 में 'जंगल सत्याग्रह' किया। इस आंदोलन में उनके साथ अनेक प्रमुख स्वयंसेवकों ने हिस्सा लिया। सत्याग्रहियों को पुलिस ने गिरफ्तार किया और जेल भेज दिया। डॉक्टर साहब को नौ माह का कठोर कारावास दिया गया। इससे पूर्व 1921 के आंदोलन में भी डॉक्टर साहब को जेल की सजा हुई थी। महात्मा गांधी के सविनय अवज्ञा आंदोलन को मध्यभारत में सफल बनाने के लिए स्वयंसेवकों ने अथक प्रयास किया। संघ के सरकार्यवाह जीएम हुद्दार,

नागपुर के संघचालक अप्पा साहेब हलदे, सिरपुर के संघचालक बाबूराव वैद्य, संघ के सरसेनापति मार्तंडराव जोग के साथ संघ के अन्य प्रमुख कार्यकर्ताओं के आंदोलन में शामिल होने के कारण चार-चार माह का कारावास मिला।

अपनी स्थापना के कई वर्षों बाद कांग्रेस को जनमानस के दबाव के कारण 31 दिसंबर, 1929 को लाहौर में रावी के तट पर पहली बार 'पूर्ण स्वराज्य' का प्रस्ताव पारित करना पड़ा। याद रहे कि डॉ. हेडगेवार ने 1920 में नागपुर में आयोजित कांग्रेस अधिवेशन में ही पूर्ण स्वराज्य का प्रस्ताव पारित कराने का प्रयास किया था। उन्होंने कांग्रेस की प्रस्ताव समिति के सामने सुझाव रखा था कि कांग्रेस का उद्देश्य भारत को पूर्ण स्वतंत्र कर भारतीय गणतंत्र की स्थापना करना और विश्व को पूंजीवाद के चंगुल से मुक्त करना होना चाहिए। बहरहाल, सम्पूर्ण स्वतंत्रता का उनका सुझाव कांग्रेस ने 9 वर्ष बाद 1929 के लाहौर अधिवेशन में स्वीकृत किया। कांग्रेस का यह निर्णय संघ के घोषित उद्देश्य के अनुरूप था। इसलिए, इससे आनंदित होकर सरसंघचालक डॉ. हेडगेवार ने संघ की सभी शाखाओं को 26 जनवरी, 1930 को कांग्रेस का अभिनंदन करने, राष्ट्रध्वज का वंदन करने और स्वतंत्रता दिवस मनाने के लिए निर्देशित किया। साथ ही यह भी कहा कि शाखाओं पर भाषण करके स्वतंत्रता के वास्तविक अर्थ एवं महत्व को समझाया जाए। सरसंघचालक के निर्देशानुसार, संघ की सभी शाखाओं पर 26 जनवरी, 1930 को सायं 6 बजे स्वतंत्रता दिवस मनाया गया।

संघ के स्वयंसेवकों ने 1942 के 'अंग्रेजो, भारत छोड़ो' आंदोलन में भी सहभागिता की। 8 अगस्त, 1942 को मुंबई के गोवलिया टैंक मैदान पर कांग्रेस अधिवेशन में महात्मा गांधीजी ने आंदोलन की घोषणा की। दूसरे दिन से ही देशभर में आंदोलन प्रारंभ हो गया। विदर्भ में बावली (अमरावती), आष्टी (वर्धा) और चिमूर (चंद्रपुर) में हुए आंदोलनों में संघ के स्वयंसेवकों ने ही नेतृत्व किया। चिमूर के समाचार बर्लिन रेडियो पर भी प्रसारित हुए। यहां के आन्दोलन का नेतृत्व कांग्रेस के उद्धवराव कोरेकर और संघ के अधिकारी दादा नाईक, बाबूराव बेगडे, अण्णाजी सिरास ने किया। चिमूर के इस आन्दोलन में अंग्रेज की गोली से एकमात्र मृत्यु बालाजी रायपुरकर की हुई, जो संघ स्वयंसेवक थे। इस आंदोलन के अंतर्गत राजस्थान में प्रचारक जयदेवजी पाठक, आर्वी (विदर्भ) में डॉ. अण्णासाहब देशपांडे, जशपुर (छत्तीसगढ़) में रमाकांत केशव (बालासाहब) देशपांडे, दिल्ली में वसंतराव ओक एवं चंद्रकांत भारद्वाज और पटना (बिहार) में अधिवक्ता कृष्ण वल्लभप्रसाद नारायण सिंह (बबुआजी) ने भाग लिया।

अंग्रेज सरकार संघ के बढ़ते प्रभाव से घबरा गई थी। इसलिए उसने संघ पर आंशिक प्रतिबंध लगाने शुरू कर दिए ताकि संघरूपी आंदोलन को रोका जा सके। गुप्तचर विभाग की रिपोर्ट के आधार पर अंग्रेज सरकार ने सबसे पहले 15 दिसंबर, 1932 को एक सर्कुलर निकालकर सरकारी कर्मचारियों को संघ में भाग लेने से प्रतिबंधित कर दिया। वहीं, 5 अगस्त, 1940 को ब्रिटिश सरकार ने संघ की सैनिक वेशभूषा और प्रशिक्षण पर पूरे देश में प्रतिबंध लगा दिया। क्योंकि सरकार को गुप्तचर रिपोर्ट में यह जानकारी मिलने लगी थी कि संघ के स्वयंसेवक पूर्ण स्वतंत्रता की ओर तेजी से अग्रसर हैं। राष्ट्रीय आंदोलनों में बढ़-चढ़ कर सहभागिता कर रहे हैं। उल्लेखनीय है कि संघ के प्रचारक बाबा साहब आपटे ने 12 दिसंबर, 1943 को जबलपुर में गुरुदक्षिणा उत्सव पर स्वयंसेवकों से कहा- "अंग्रेजों का अत्याचार असहनीय है, देश को स्वतंत्रता के लिए तैयार हो जाना चाहिए"। संघ अपनी स्थापना के समय से ही देश की स्वतंत्रता का स्वप्न लेकर चल रहा था। भारत की सर्वांग स्वतंत्रता के लिए संघ के स्वयंसेवक प्रतिज्ञाबद्ध थे इसलिए, अवसर आने पर उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलनों में सहभागिता की, जेल गए और बलिदान भी दिया।

हवा-पानी की आज़ादी के बिना आज़ादी अधूरी

ललित गर्ग

आज़ादी केवल तिथि नहीं, एक निरंतर संघर्ष है। यह सिर्फ़ झंडा फहराने का अधिकार नहीं, बल्कि हर नागरिक को मूलभूत सुविधाएं, समान अवसर और सम्मान देने की जिम्मेदारी है। हवा, पानी और धरती- इनके बिना जीवन संभव नहीं।

देश एवं दुनिया के सामने स्वच्छ जल एवं बढ़ते प्रदूषण की समस्या गंभीर से गंभीरतर होती जा रही है। शुद्ध हवा एवं पीने के स्वच्छ जल की निरन्तर घटती मात्रा को लेकर बड़े खतरे खड़े हैं। धरती पर जीवन के लिये जल एवं हवा सबसे जरूरी वस्तु है, जल एवं हवा है तो जीवन है। जल एवं हवा ही किसी भी प्रकार के जीवन और उसके अस्तित्व को संभव बनाता है। जीवन के तीन आधार तत्व हैं-हवा, पानी और धरती है। इनकी संरक्षा न केवल हमारी अस्तित्व-निर्भरता से जुड़ी है, बल्कि मानवता की नैतिक जिम्मेदारी भी है। आज का युग, जिस तेजी से विकसित हो रहा है, उसी भागदौड़ में हवा और पानी को परम स्वाधीनता से वंचित कर रहा है। रूस-यूक्रेन युद्ध, दिल्ली का उच्च प्रदूषण सूचकांक, अमेरिका के जंगलों की धुएं से गंदली हवा, बढ़ता वाहन प्रदूषण-ये सब संकेत देते हैं कि हवा से आज़ादी मतलब 'स्वस्थ हवा' पाना है। हमारे "आज़ादी" को नया अर्थ चाहिए तो यह प्राकृतिक संसाधनों यानी हवा एवं पानी की आज़ादी पर भी निर्भर है, जो मानव व पर्यावरण-उन्नत दोनों के लिए जीवनदायिनी है। स्वतंत्रता का अर्थ केवल राजनीतिक बंधनों से मुक्ति नहीं है, बल्कि जीवन के हर पहलू में सुरक्षित, स्वस्थ और सम्मानजनक अस्तित्व का अधिकार है। 78वें स्वतंत्रता दिवस पर जब हम आज़ादी का जश्न मना रहे हैं, तब यह सवाल भी उठाना जरूरी है कि क्या हमें हवा और पानी की सच्ची आज़ादी मिली है?

आज़ादी केवल तिथि नहीं, एक निरंतर संघर्ष है। यह सिर्फ़ झंडा फहराने का अधिकार नहीं, बल्कि हर नागरिक को मूलभूत सुविधाएं, समान अवसर और सम्मान देने की जिम्मेदारी है। हवा, पानी और धरती- इनके बिना जीवन संभव नहीं। पर दुर्भाग्य से आज इन मूलभूत संसाधनों पर गहरा संकट है। स्वच्छ हवा में सांस लेना और शुद्ध पानी पीना अब विलासिता जैसी चीज बनती जा रही है। 'हवा-पानी की आज़ादी' का मतलब है कि हर व्यक्ति को स्वच्छ हवा और शुद्ध पानी तक सहज पहुंच हो। यह केवल स्वास्थ्य का ही नहीं, बल्कि मानवता का मूल अधिकार है। परंतु शहरीकरण, औद्योगीकरण और संसाधनों के दुरुपयोग ने हवा और पानी दोनों को विषाक्त बना दिया है। विश्व में 2.2 अरब लोगों के पास सुरक्षित पेयजल की सुविधा नहीं है। भारत में करोड़ों लोग अभी भी दूषित या अपर्याप्त पानी पर निर्भर हैं। रसायनयुक्त कृषि, औद्योगिक अपशिष्ट, प्लास्टिक प्रदूषण और भूजल के अंधाधुंध दोहन ने जल की गुणवत्ता को लगातार गिराया है।

जल संकट भविष्य में सबसे बड़ा युद्ध का कारण बन सकता है। भारत-पाकिस्तान के बीच बढ़ती युद्ध की संभावनाओं का कारण भी जल ही बनता हुआ दिख रहा है। ऑपरेशन सिंधूर के बाद भारत ने पाक पर सिंधु जल समझौते को रद्द कर देने से पाक में जल संकट खड़ा हो गया है, पाक की ओर से परमाणु बम की धमकी दी जा रही है, वहीं भारत भी युद्ध की संभावनाओं को देखते हुए तैयार में जुट गया है। जल संकट केवल भारत और पाक में ही नहीं, दुनिया में एक बड़ी समस्या है। कैलिफ़ोर्निया का भू-स्खलन, हिमालय से ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं, नदियों का प्रवाह घट रहा है, भूजल का स्तर गिर रहा है। जलवायु परिवर्तन के कारण बाढ़, सूखा और भूस्खलन की घटनाएं बढ़ी हैं। आंकड़े बताते हैं कि 2000 से अब तक बाढ़ की घटनाओं में 134 प्रतिशत और सूखे की अवधि में 29 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। धरती का 70 प्रतिशत भाग पानी से भरा है, लेकिन पीने योग्य पानी केवल 3 प्रतिशत है, जिसमें से उपयोगी मीठा जल 1 प्रतिशत से भी कम है। बढ़ती जनसंख्या और बर्बादी ने इस अमूल्य संसाधन को गंभीर संकट में डाल दिया है।

दिल्ली और अन्य महानगरों में वायु गुणवत्ता सूचकांक लगातार 'बहुत खराब' या 'खतरनाक' श्रेणी में पहुंचता है। प्रदूषित हवा श्वसन रोग, हृदय रोग और कैंसर तक का कारण बन रही है। बच्चों और बुजुर्गों पर इसका सबसे अधिक दुष्प्रभाव पड़ता है। रिसर्च बताती है कि दिल्ली के 75 प्रतिशत से अधिक बच्चों को सांस लेने में कठिनाई होती है, आंखों में जलन और खांसी की शिकायत रहती है। वाहन प्रदूषण, औद्योगिक धुआं, निर्माण गतिविधियों की धूल और फसल अवशेष जलाना-ये सब मिलकर हवा को जहरीला बना रहे हैं।

भारत के पास जल प्रबंधन की प्राचीन परंपरा रही है-तालाब, कुएं, बावड़ियां, जोहड़ और सरोवर जल संरक्षण के अद्भुत उदाहरण हैं। राजस्थान के किलों और गांवों में जल संचयन व्यवस्था आज भी दुनिया के लिए प्रेरणा है। पर्यावरणविद अनुपम मिश्र कहते थे- "अब भी खरे हैं तालाब।" आज आवश्यकता है कि हम इन परंपराओं को आधुनिक तकनीक के साथ जोड़कर जल संकट का समाधान करें। सरकार ने 'अटल भूजल योजना', 'नल से जल' और 'नदी पुनर्जीवन' जैसी योजनाएं शुरू की हैं। लेकिन केवल सरकारी प्रयास काफी नहीं, जनभागीदारी आवश्यक है। गांव-गांव में वर्षा जल संचयन, नदियों की सफाई, औद्योगिक अपशिष्ट का प्रबंधन और भूजल संग्रहण की व्यवस्था अनिवार्य होनी चाहिए। हवा की शुद्धता के लिए, जरूरी है कि सार्वजनिक परिवहन को विश्वसनीय और सुलभ बनाया जाये, इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा दिया जाये, औद्योगिक उत्सर्जन पर सख्त नियंत्रण हो, हरित क्षेत्र और वृक्षारोपण को बढ़ाना अत्यंत जरूरी कदम हैं। आज़ादी का असली मतलब यह है कि सत्ता का केंद्र नागरिक हो, उसकी मूलभूत सुविधाएं हों और उसकी आवाज सिर्फ़ चुनावी भाषणों में नहीं, नीतियों और फैसलों में भी सुनी जाए।

आज़ादी के अमृतकाल में 78वां स्वतंत्रता दिवस मनाते हुए हमें हवा एवं पानी की आज़ादी के लिये संकल्प लेना होगा। वायु-जल संसाधनों पर गहराते संकट को खत्म करने के लिए अपनी जीवन-शैली में परिवर्तन करना होगा। इसके लिए सभी लोगों को बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष, किसान, उद्यमियों सभी को पहल करनी है। पानी को बचाने एवं हवा की शुद्धि की आदत को व्यवहार में ढालना होगा। हवा में घूल रहा प्रदूषण भी खतरनाक होता जा रहा है। भू-विज्ञान मंत्रालय के एक रिसर्च के अनुसार वायु निर्माण में 41 प्रतिशत हिस्सेदारी वाहनों की रहती है। भवन निर्माण आदि से उड़नेवाली धूल 21.5 प्रतिशत के दूसरे स्थान पर है। दिल्ली परिवहन विभाग के आंकड़े के मुताबिक पिछले 30 साल में वाहन और उनसे होने वाला प्रदूषण तीन गुणा बढ़ गया है। फिर भी सार्वजनिक यातायात व्यवस्था को बेहतर और विश्वसनीय बनाने की दिशा में कुछ खास नहीं किया गया। इस विषम एवं ज्वलंत समस्या से मुक्ति के लिये हर राजनीतिक दल एवं सरकारों को संवेदनशील एवं अन्तर्दृष्टि-सम्पन्न बनना होगा। खेती में प्रदूषकों की रोकथाम से जल संसाधनों के संकट और पारिस्थितिकी तंत्र में बदलाव के संकट को कम किया जा सकता है। नदियों के प्राकृतिक प्रवाह को नियमित करके समस्या को काफी हद तक सुलझाया जा सकता है। उपलब्ध जल संसाधनों तक उपभोग को सीमित करके, संसाधन पर दबाव कम किया जा सकता है।

आज हम दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र हैं, हमारी अर्थव्यवस्था तेजी से आगे बढ़ रही है, विज्ञान और तकनीक में नए मुकाम हासिल हो रहे हैं। मेट्रो ट्रेन, डिजिटल पेमेंट, सैटेलाइट मिशन और वैश्विक मंच पर बढ़ता प्रभाव हमें गर्व से भर देता है। लेकिन इस चमक के पीछे एक सच छुपा है-हमारी आज़ादी अब भी अधूरी है। यह अधूरापन केवल गरीबी या बेरोजगारी का नहीं, बल्कि शुद्ध हवा-पानी जैसी मूलभूत जरूरतों से जुड़ी सोच, व्यवस्था और व्यवहार में गहरे बैठी असमानताओं का है। हमने अंग्रेज़ी शासन से मुक्ति पाई, लेकिन अगर हमारे बच्चे दूषित हवा में सांस लें और जहरीला पानी पिएं, तो यह कैसी आज़ादी है?

मोदी, जयशंकर और डोभाल... भारत की ट्रिपल इंजन कूटनीति ने दुनिया में मचाया धमाल

नीरज कुमार दुबे

अमेरिका के साथ टैरिफ विवाद और वैश्विक शक्ति-संतुलन में हो रहे बदलाव के बीच, यह सक्रियता भारत को न केवल दबाव झेलने की क्षमता देती है, बल्कि उसे एक निर्णायक वैश्विक खिलाड़ी के रूप में स्थापित करने की दिशा में भी ले जाती है। भारत का मौजूदा कूटनीतिक कैलेंडर इस समय एक दुर्लभ समन्वय का उदाहरण है, जहां प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, विदेश मंत्री एस. जयशंकर और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल तीनों समानांतर मोर्चों पर काम कर रहे हैं। यह ट्रिपल इंजन रणनीति भारत को न केवल अंतरराष्ट्रीय मंचों पर सक्रिय बनाए रखती है, बल्कि विभिन्न वैश्विक शक्ति केंद्रों के साथ तालमेल बैठाने में भी मदद करती है। मोदी का आगामी तियानजिन (चीन) दौरा, SCO शिखर सम्मेलन में भागीदारी और सीमा शांति पर जोर, जयशंकर का मॉस्को दौरा और रूस के साथ ऊर्जा व तकनीकी सहयोग पर वार्ता तथा डोभाल की चीन व रूस में उच्च-स्तरीय सुरक्षा बातचीत, ये सभी एक ही लक्ष्य की ओर इशारा करते हैं- रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखते हुए बहु-संरेखण की नीति को मजबूत करना।

अमेरिका के साथ टैरिफ विवाद और वैश्विक शक्ति-संतुलन में हो रहे बदलाव के बीच, यह सक्रियता भारत को न केवल दबाव झेलने की क्षमता देती है, बल्कि उसे एक निर्णायक वैश्विक खिलाड़ी के रूप में स्थापित करने की दिशा में भी ले जाती है। भारत का यह व्यस्त कूटनीतिक कैलेंडर इस बात का संकेत है कि आने वाले महीनों में क्षेत्रीय और वैश्विक राजनीति में उसकी भूमिका और भी अहम होने वाली है।

हम आपको बता दें कि भारत की कूटनीति इस समय तीन मोर्चों पर एक साथ सक्रिय है— अमेरिका से टैरिफ विवाद, रूस के साथ सामरिक–आर्थिक साझेदारी और चीन के साथ सीमा मुद्दों पर संवाद। इसी परिप्रेक्ष्य में विदेश मंत्री एस. जयशंकर अगले सप्ताह रूस की राजधानी मॉस्को में अपने समकक्ष सर्गेई लावरोव से 21 अगस्त को वार्ता करेंगे, जबकि इससे पहले 18 अगस्त को चीन के विदेश मंत्री वांग यी नई दिल्ली में राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (NSA) अजीत डोभाल के साथ सीमा मुद्दे पर वार्ता करेंगे। यह घटनाक्रम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की इस माह के अंत में तियानजिन (चीन) यात्रा की पृष्ठभूमि तैयार कर रहा है, जहां वह शंघाई सहयोग संगठन (SCO) शिखर सम्मेलन में भाग लेंगे।

पिछले सप्ताह अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भारत के उत्पादों पर अतिरिक्त 25% टैरिफ लगाकर कुल सीमा शुल्क 50% कर दिया, जिसका सीधा कारण भारत का रूसी तेल का आयात बताया गया। हालांकि भारत ने स्पष्ट किया है कि ऊर्जा खरीद राष्ट्रीय हित और बाजार परिस्थितियों पर आधारित है, न कि किसी दबाव पर। यह कदम भारत–अमेरिका संबंधों में तनाव पैदा कर सकता है, खासकर ऐसे समय में जब भारत संयुक्त राष्ट्र महासभा के लिए प्रधानमंत्री मोदी की अमेरिका यात्रा पर विचार कर रहा है।

इसी बीच, रूस के साथ भारत उच्च-स्तरीय संवाद तेज कर रहा है। NSA डोभाल हाल ही में मॉस्को जाकर राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से मिले थे और अब जयशंकर वहां द्विपक्षीय मुद्दों, ऊर्जा सहयोग और पुतिन की आगामी भारत यात्रा की तैयारियों पर चर्चा करेंगे। उधर, चीनी विदेश मंत्री वांग यी की नई दिल्ली यात्रा स्पेशल रिप्रेजेंटेटिव (SR) संवाद के तहत हो रही है, जिसमें वांग और डोभाल सीमा मुद्दे पर वार्ता करेंगे। यह वार्ता ऐसे समय हो रही है जब गलवान घाटी की 2020 की हिंसक झड़प के बाद भारत–चीन संबंधों में आई कड़वाहट को कम करने के लिए दोनों देश कई संवाद तंत्रों को पुनर्जीवित कर रहे हैं। हम आपको याद दिला दें कि पिछले वर्ष कज़ान (रूस) में मोदी और शी जिनपिंग की मुलाकात में कैलाश मानसरोवर यात्रा बहाल करने, चीनी पर्यटकों को वीज़ा जारी करने और जल्द ही सीधी उड़ानें शुरू करने जैसे कदमों पर सहमति बनी थी।

कृषि प्लास्टिक प्रदूषण से निपटना

विजय गर्ग

प्लास्टिक मानव समाज के लिए निर्विवाद लाभ लाते हैं। लेकिन अब, प्लास्टिक 'असहनीय संकट' के रूप में उभर रहा है। पहला सिंथेटिक प्लास्टिक 1907 में तैयार किया गया था। 1950 तक, दुनिया दो मिलियन टन (एमटी) का उत्पादन कर रही थी। यह अब सालाना 450 मिट्रिक टन से अधिक का उत्पादन करता है। केवल नौ प्रतिशत को सफलतापूर्वक पुनर्नवीनीकरण किया जाता है।

हर साल, 19-23 मीट्रिक टन प्लास्टिक अपशिष्ट जलीय पारिस्थितिक तंत्र में लीक होता है, झीलों, नदियों और समुद्रों को प्रदूषित करता है और 13 मीट्रिक टन प्लास्टिक मिट्टी में जमा होता है। प्लास्टिक का कचरा अब हर जगह है, जो हमारे जंगलों, मिट्टी, पानी और हवा को नुकसान पहुंचाता है। माइक्रोप्लास्टिक ने जानवरों, पौधों, फलों और यहां तक कि मानव शरीर में प्रवेश किया है। एक हालिया अध्ययन में एक लीटर बोतलबंद पानी मिला जिसमें प्लास्टिक के लगभग 240,000 छोटे टुकड़े शामिल थे।

प्लास्टिक ने दुनिया के हर कोने में घुसपैठ की है - हमारे द्वारा पीने वाले पानी, हमारे द्वारा खाए जाने वाले भोजन और सांस लेने वाली हवा को दूषित करना। हम में से प्रत्येक के लिए इस कचरे के जिम्मेदार उपयोग और प्रबंधन के लिए सूचित सामूहिक कार्रवाई करने का उच्च समय है।

कृषि में प्लास्टिक का उपयोग पिछले दशकों में, प्लास्टिक कृषि का एक अभिन्न हिस्सा बन गया है और आधुनिक वाणिज्यिक कृषि की तीव्रता के साथ यह उपयोग बढ़ रहा है। खेत भर में पॉलीथीन फिल्म का आवेदन 1950 के दशक में शुरू हुआ क्योंकि यह मिट्टी के तापमान को सफलतापूर्वक मध्यम कर सकता है, खरपतवार के विकास को सीमित कर सकता है और नमी के नुकसान को रोक सकता है। यह विधि कपास, मक्का और गेहूं की पैदावार को अपेक्षाकृत कम लागत पर औसतन 30 प्रतिशत तक बढ़ाती पाई गई। प्लास्टिक का उपयोग अब मल्चिंग, अंकुर ट्रे, सूक्ष्म सिंचाई, तालाब लाइनर, पॉलीहाउस, खाद्य भंडारण, पैकेजिंग और परिवहन में किया जाता है। पॉलीथीन अवशेष अब प्रति हेक्टेयर 300 किलोग्राम तक के स्तर पर उपचारित मिट्टी में तेजी से प्रचलित है।

2021 में, खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ) ने कृषि में प्लास्टिक के उपयोग का आकलन करते हुए एक ऐतिहासिक रिपोर्ट जारी की। रिपोर्ट में गणना की गई है कि, 2019 में, कृषि मूल्य श्रृंखलाओं ने संयंत्र और पशु उत्पादों में 12 मीट्रिक टन प्लास्टिक उत्पादों और खाद्य पैकेजिंग में 37.3 मीट्रिक टन का उपयोग किया।

सिर्फ एक किलो पतली मल्चिंग शीट 700 वर्ग फीट की कृषि भूमि को कवर करने और दूषित करने के लिए पर्याप्त है। कृषि भूमि में प्लास्टिक कचरे का संचय मिट्टी के स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाता है, पारिस्थितिक तंत्र को बाधित करता है, और स्थायी खेती प्रथाओं के लिए एक बढ़ती चुनौती बन जाता है। कृषि भूमि में प्लास्टिक का कचरा मिट्टी की उर्वरता को कम करता है। प्लास्टिक के टुकड़े वायु परिसंचरण में बाधा डाल सकते हैं और मिट्टी के स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण माइक्रोबियल समुदायों को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकते हैं। वे रूट बायोमास और समग्र पौधे के विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकते हैं, केंचुओं जैसे मिट्टी के जीवों को नुकसान पहुंचा सकते हैं, उनके भोजन और उत्सर्जन को प्रभावित कर सकते हैं। माइक्रोप्लास्टिक्स को पौधों द्वारा अवशोषित किया जा सकता है, संभावित रूप से खाद्य श्रृंखला और मानव निकायों में प्रवेश कर सकता है। कृषि में प्लास्टिक प्रदूषण दुर्भाग्य से नीति और अभ्यास स्तरों पर आवश्यक ध्यान का अभाव है और खेती और पारिस्थितिक तंत्र की समग्र स्थिरता को खतरे में डाल रहा है।

सिर्फ एक किलो पतली मल्चिंग शीट 700 वर्ग फीट की कृषि भूमि को कवर करने और दूषित करने के लिए पर्याप्त है। कृषि भूमि में प्लास्टिक कचरे का संचय मिट्टी के स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाता है, पारिस्थितिक तंत्र को बाधित करता है, और स्थायी खेती प्रथाओं के लिए एक बढ़ती चुनौती बन जाता है। कृषि भूमि में प्लास्टिक का कचरा मिट्टी की उर्वरता को कम करता है। प्लास्टिक के टुकड़े वायु परिसंचरण में बाधा डाल सकते हैं और मिट्टी के स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण माइक्रोबियल समुदायों को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकते हैं। वे रूट बायोमास और समग्र पौधे के विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकते हैं, केंचुओं जैसे मिट्टी के जीवों को नुकसान पहुंचा सकते हैं, उनके भोजन और उत्सर्जन को प्रभावित कर सकते हैं। माइक्रोप्लास्टिक्स को पौधों द्वारा अवशोषित किया जा सकता है, संभावित रूप से खाद्य श्रृंखला और

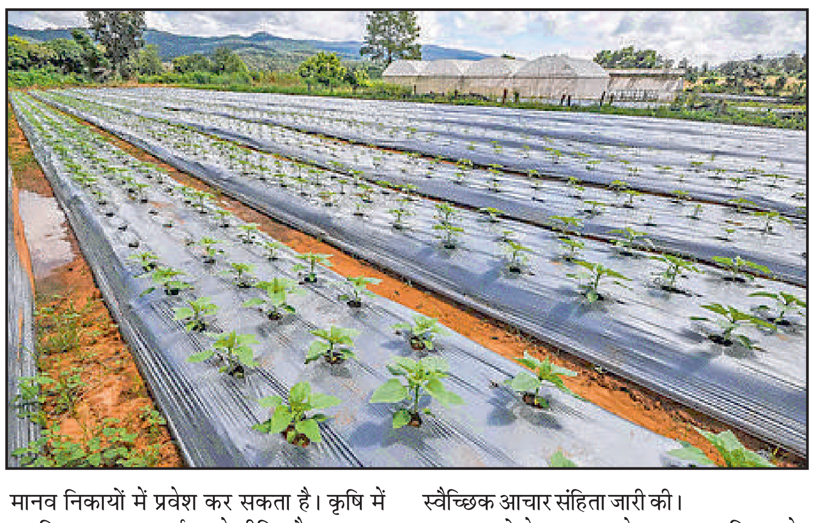

मानव निकायों में प्रवेश कर सकता है। कृषि में प्लास्टिक प्रदूषण दुर्भाग्य से नीति और अभ्यास स्तरों पर आवश्यक ध्यान का अभाव है और खेती और पारिस्थितिक तंत्र की समग्र स्थिरता को खतरे में डाल रहा है।

आम तौर पर, कृषि निर्णयों में अपर्याप्त समग्र, पर्यावरणीय और दीर्घकालिक दृष्टिकोण के साथ एक विशेष फसल के मौसम की आर्थिक उत्पादकता का प्रभुत्व होता है। प्लास्टिक की तीव्रता में वृद्धि और प्रसार और व्यवस्थित निपटान की कमी और प्रबंधन विनाशकारी परिणाम पैदा करते हैं। खेती समुदाय इन परिणामों के बारे में अनभिज्ञ और असूचित हैं। यहां तक कि प्लास्टिक प्रदूषण के प्रवचन को शहरी कचरे और जल निकायों के प्रदूषण पर भारी पड़ता है, जिसमें कृषि-प्लास्टिक पर कोई गंभीर कार्रवाई नहीं होती है। महाराष्ट्र प्लास्टिक एक्शन रोडमैप जैसी हालिया रणनीतिक पहलों में से कुछ ही कृषि-प्लास्टिक मुद्दे को पर्याप्त रूप से नहीं पहचानते हैं।

कृषि-प्लास्टिक प्रदूषण से होने वाले नुकसान के बारे में ज्ञान और समझ हाल ही में है। एफएओ ने 2019 में अध्ययन किया और अक्टूबर 2024 में कृषि में प्लास्टिक के सतत उपयोग और प्रबंधन पर स्वैच्छिक आचार संहिता जारी की।

एफएओ के आकलन के अनुसार, एशिया को कृषि-प्लास्टिक का सबसे बड़ा उपयोगकर्ता माना जाता है, जो वैश्विक उपयोग का लगभग आधा हिस्सा है। इस बात के सबूत हैं कि अधिकांश प्लास्टिक जलाए जाते हैं, दफन किए जाते हैं, या लैंडफिल होते हैं, हालांकि रिकॉर्ड कीपिंग आम तौर पर अस्तित्वहीन होती है। माइक्रोप्लास्टिक पर कर्नाटक और महाराष्ट्र में हुए शोध में मिट्टी में सबसे अधिक माइक्रोप्लास्टिक संदूषण के सबूत मिले - महाराष्ट्र में एक डंपसाइट पर 87.57 टुकड़े प्रति किलोग्राम मिट्टी। एक हालिया नमूना अध्ययन से पता चलता है कि 90 प्रतिशत भारतीय गांवों में कोई अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली नहीं है, जबकि 67 प्रतिशत परिवार प्लास्टिक कचरे को जलाना पसंद करते हैं।

कृषि-प्लास्टिक प्रदूषण से निपटना समयबद्ध कार्रवाई-उन्मुख नीति ढांचे की तत्काल आवश्यकता है। उपयोग किए जाने वाले प्लास्टिक उत्पादों की मात्रा और पर्यावरण में रिसाव की निगरानी करने की भी आवश्यकता है। परिचालन स्तर पर, एग्री-प्लास्टिक के बेहतर प्रबंधन की दिशा में तत्काल कार्रवाई और एकल उपयोग प्लास्टिक के उपयोग पर तत्काल रोक लगाने की आवश्यकता है। रोकथाम, कमी, पुनः उपयोग और रीसाइक्लिंग के माध्यम से प्लास्टिक अपशिष्ट उत्पादन को कम करने के लिए परिपत्र दृष्टिकोण को बढ़ावा देना आवश्यक है।

खेत के फैसलों की जानकारी दी लचीला और टिकाऊ कृषि खाद्य प्रणालियों को प्राप्त करने के लिए, कृषि प्लास्टिक प्रदूषण से निपटना सर्वोपरि है। सबसे पहले, हमें कृषक समुदाय को विनाशकारी परिणामों को समझने की आवश्यकता है। जो लोग अल्पकालिक मौद्रिक लाभ का आनंद ले रहे हैं, उन्हें कृषि कार्यों के माध्यम से विचार करने की आवश्यकता है।

नीति ढांचे को लागू करना नीति में कृषि-प्लास्टिक कचरे के उत्पादन, उपयोग और प्रबंधन की जांच करनी चाहिए। कानूनी रूप से बाध्यकारी ढांचे द्वारा समर्थित समयबद्ध लक्ष्य-उन्मुख रणनीति को लागू करने की आवश्यकता है।

कृषि-प्लास्टिक कचरे के उत्पादन, उपयोग और प्रबंधन के दौरान निर्दिष्ट मानदंडों का उल्लंघन करने वालों के लिए कार्यों और सजा की निगरानी की आवश्यकता है। गैर-जिम्मेदार डंपिंग या एग्री-प्लास्टिक को जलाने पर पूरा रोक होनी चाहिए।

कानूनी ढांचे को प्लास्टिक निर्माताओं को अपने उत्पादों के जीवन के अंत प्रबंधन के लिए जिम्मेदार ठहराना चाहिए।

ग्राम स्तरीय जलवायु कार्य योजना भारत में 665,000 गाँव और 268,000 ग्राम पंचायतें हैं। हर साल, गाँव और ग्राम पंचायतें अपनी वार्षिक विकास योजना (ADP) तैयार करती हैं।

गांवों में जलवायु कार्रवाई के लिए भारत सरकार का दृष्टिकोण मुख्य रूप से जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्य योजना और जलवायु परिवर्तन पर इसके बाद की राज्य कार्रवाई योजनाओं द्वारा निर्देशित है। इन चौराहों का उद्देश्य जलवायु चिंताओं को विभिन्न विकासात्मक कार्यक्रमों में एकीकृत करना और स्थानीय स्तर पर जलवायु लचीलापन बनाना है, विशेष रूप से कृषि और ग्रामीण आजीविका पर ध्यान केंद्रित करना है।

गांव की जलवायु कार्य योजना को कृषि-प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन, उपयुक्त विकल्पों को अपनाने के साथ एकीकृत किया जाना चाहिए, और जलवायु-लचीला कृषि का भी हिस्सा होना चाहिए। प्लास्टिक कचरे को जलाने, दफनाने या खुली डंपिंग जैसी गैर-जिम्मेदार खतरनाक प्रथाओं को दंडित करने के लिए, मजबूत निगरानी होनी चाहिए। इसलिए, अपशिष्ट प्रबंधन को कृषक समुदाय के नेतृत्व वाली पहल को गांव एडीपी के साथ शामिल किया जाना चाहिए।

पुनर्योजी खेती प्रथाओं का दत्तक ग्रहण संरक्षण कृषि (जैसे, कवर क्रॉपिंग) जैसी प्रथाएं जो प्लास्टिक-गहन तरीकों की आवश्यकता को कम करती हैं, उन्हें अपनाया जाना चाहिए।

कृषि को अधिक लचीला बनाने के लिए स्थायी कृषि प्रथाओं को बढ़ावा देना चाहिए। इन प्रथाओं में वर्मिन-कंपोस्टिंग, बायो-मल्चिंग, बायो-फर्टिलाइजर्स, बायो-कीटनाशक और मिट्टी और नमी संरक्षण शामिल हैं। ये मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार करते हैं, मिट्टी के कार्बन की रक्षा करते हैं और स्थानीय जैव विविधता को पुनर्जीवित करते हैं।

हमें यह देखना चाहिए कि एक आत्मनिर्भर सशक्त कृषक समुदाय कृषि और आजीविका में सूचित जलवायु कार्रवाई निर्माण लचीलापन का स्वामित्व लेता है और सभी प्रगतिशील कार्य करता है।

मोरपंख, मुकुट और बांसुरी से आगे — बच्चों के मन में कान्हा के संस्कार बोने का अवसर

कान्हा बनाना केवल मोरपंख और मुकुट पहनाना नहीं, बल्कि बच्चों में प्रेम, साहस, करुणा और रचनात्मकता के बीज बोना है। आधुनिक कान्हा वह है जो तकनीक का सही उपयोग करे, अन्याय के विरुद्ध खड़ा हो, और अपने समाज को सुंदर बनाने का सपना देखे। इस जन्माष्टमी पर बच्चों को केवल वेशभूषा न दें, उन्हें कान्हा के गुण पहनाएँ। जब हर बच्चा मासूमियत और नैतिकता से सजेगा, तभी हमारा समाज सच्चे वृंदावन में बदलेगा।

- डॉ. प्रियंका सौरभ

जन्माष्टमी भारत की सांस्कृतिक और धार्मिक चेतना में गहराई से रचा-बसा एक ऐसा पर्व है, जो केवल एक तिथि भर नहीं, बल्कि सदियों से हमारी भावनाओं, हमारी स्मृतियों और हमारे जीवन-मूल्यों का अमर उत्सव रहा है। भाद्रपद मास की कृष्ण पक्ष की अष्टमी की रात्रि जब घड़ियां बारह का अंक छूती हैं और मंदिरों में शंखनाद गूंज उठता है, तब मानो समय ठहर जाता है। घर-घर में, गलियों में, मंदिरों में, झांकियों और सजावट के मध्य, झूले में नन्हे कान्हा को विराजमान किया जाता है। भक्ति, प्रेम, उल्लास और श्रद्धा का यह संगम केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक आत्मा का उत्सव है।

इस दिन भारत के हर कोने में एक अद्भुत दृश्य देखने को मिलता है — छोटे-छोटे बच्चे मोरपंख, पीताम्बर, बांसुरी और मुकुट से सजे, कान्हा के रूप में घर की शोभा बढ़ाते हैं। यह परंपरा केवल रूप-सज्जा भर नहीं है; इसके पीछे गहरी सांस्कृतिक और नैतिक सोच है। जब हम अपने बच्चों को कान्हा का रूप देते हैं, तो हम केवल उनके शरीर को नहीं सजाते, बल्कि उनके मन में एक ऐसी छवि अंकित करते हैं, जिसमें आनंद है, मासूमियत है, प्रेम है, मित्रता है और अन्याय के खिलाफ डटने का साहस भी।

कृष्ण का बाल-रूप भारतीय जनमानस में सदैव विशेष स्थान रखता है। माखन-चोरी की नटखटता, गोपियों के साथ स्नेहपूर्ण संवाद, बांसुरी की मधुर तान, और कंस जैसे अत्याचारी के विरुद्ध निर्भीक खड़ा होना — यह सब केवल पुरानी कथाएँ नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला के संदेश हैं। इन कथाओं में मनोरंजन भी है, और शिक्षा भी। जब बच्चा कान्हा बनता है, तो वह केवल एक पात्र का अभिनय नहीं करता, बल्कि अनजाने ही इन गुणों को आत्मसात करने लगता है।

समय के साथ समाज बदलता है और उसके मूल्य भी। आज का बच्चा पहले के बच्चों की तरह खेत-खलिहान, गलियों और आंगनों में दिन भर खेलता नहीं है। उसकी दुनिया अब मोबाइल, कंप्यूटर, वीडियो गेम और सोशल मीडिया के दायरे में सिमट गई है। पारंपरिक खेल और खुले में दौड़-भाग की जगह डिजिटल मनोरंजन ने ले ली है। ऐसे समय में जन्माष्टमी जैसे त्योहार बच्चों को हमारी जड़ों से जोड़ने का दुर्लभ अवसर बनकर आते हैं। परंतु खतरा यह है कि यह अवसर भी कहीं केवल फोटो खिंचवाने या सोशल मीडिया पोस्ट करने भर का कार्यक्रम न बन जाए।

हमें यह समझना होगा कि कान्हा का वेश पहनाना केवल बाहरी रूप है। असली उद्देश्य है — बच्चों के भीतर कान्हा के गुणों को बोना। यह वही गुण हैं जो समय की हर कसौटी पर खरे उतरते हैं — सच्चाई, साहस, करुणा, रचनात्मकता और जीवन में आनंद की भावना। माखन-चोरी की कथा हमें सिखाती है कि आनंद लेना जीवन का हिस्सा है, लेकिन बिना किसी को नुकसान पहुंचाए। गोवर्धन पर्वत उठाने की कथा नेतृत्व, टीमवर्क और जिम्मेदारी का पाठ देती है। सुदामा-कृष्ण की मित्रता हमें सिखाती है कि संबंध केवल सुविधा या लाभ पर नहीं, बल्कि सच्चे प्रेम और निष्ठा पर आधारित होने चाहिए।

आधुनिक संदर्भ में यदि हम सोचें कि कान्हा आज के युग में जन्म लेते, तो शायद वे भी लैपटॉप पर बैठकर संगीत रचते, सोशल मीडिया पर अपने विचार रखते, और पर्यावरण संरक्षण के लिए अभियानों का नेतृत्व करते। वे अन्याय के खिलाफ आवाज़ उठाते, चाहे वह साइबर बुलींग हो, लैंगिक भेदभाव हो या प्रकृति का दोहन। वे अपने दोस्तों के साथ ऑनलाइन भी जुड़े रहते, पर उन्हें वास्तविक मुलाकात और एक-दूसरे का साथ निभाने की महत्ता भी सिखाते। यही सोच हमें

अपने बच्चों में विकसित करनी है।

जन्माष्टमी का पर्व हमें यह अनमोल अवसर देता है कि हम बच्चों को केवल मोरपंख और मुकुट ही न पहनाएँ, बल्कि उनके हृदय में वे विचार और संस्कार भी अंकित करें, जो जीवनभर उनके मार्गदर्शक बनें। हमें चाहिए कि जब हम उन्हें कान्हा का रूप दें, तो साथ ही एक कथा भी सुनाएँ — ताकि वे उस रूप का भाव समझ सकें। उदाहरण के लिए, उन्हें बताएं कि बांसुरी केवल संगीत का साधन नहीं, बल्कि प्रेम, शांति और संवाद का प्रतीक है। मुकुट केवल राजसी ठाठ का चिह्न नहीं, बल्कि जिम्मेदारी और संरक्षण का प्रतीक है। पीताम्बर केवल वस्त्र नहीं, बल्कि त्याग और सादगी का संदेश है।

त्योहार के इस अवसर को और सार्थक बनाने के लिए हमें अपने बच्चों को पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनाना चाहिए। हम उन्हें बता सकते हैं कि जैसे कान्हा ने यमुना को पवित्र रखा, वैसे ही हमें भी अपने जलस्रोतों और प्रकृति की रक्षा करनी है। हम प्लास्टिक के मुकुट और कृत्रिम सजावट से बच सकते हैं, और प्राकृतिक, हस्तनिर्मित, देशी वस्त्रों का प्रयोग कर सकते हैं। इससे न केवल त्योहार की पवित्रता बढ़ेगी, बल्कि बच्चों को पर्यावरण-हितैषी आदतों का भी ज्ञान होगा।

आधुनिक कान्हा का अर्थ केवल यह नहीं कि वह स्मार्टफोन चलाना जानता है, बल्कि यह है कि वह तकनीक का सही और जिम्मेदार उपयोग करता है। वह इंटरनेट पर ज्ञान अर्जित करता है, पर साथ ही अपनी संस्कृति से भी जुड़ा रहता है। वह मित्रों के साथ ईमानदारी से पेश आता है, बड़ों का सम्मान करता है, और जरूरतमंदों की सहायता करता है। वह अपने जीवन में सत्य को आधार और प्रेम को मार्ग बनाता है।

मेरे लिए 'मेरे कान्हा' का अर्थ है — वह हर बच्चा जिसके भीतर मासूमियत है, जो कठिनाई में भी मुस्कुराता है, जो अपने सपनों को पूरा करने के लिए साहस से काम लेता है, जो अपने आस-पास के लोगों के साथ करुणा से पेश आता है, और जो अपनी संस्कृति पर गर्व करता है। जब हम ऐसे बच्चों को गढ़ेंगे, तभी हमारा समाज सच्चे अर्थों में 'वृंदावन' बनेगा — प्रेम, सौहार्द और न्याय से भरा हुआ।

इस जन्माष्टमी पर हमें संकल्प लेना चाहिए कि हम अपने बच्चों को केवल बाहरी रूप से नहीं, बल्कि अंतरात्मा से कान्हा बनाएँगे। हम उन्हें सिखाएँगे कि जीवन में बांसुरी की मधुरता हो, मुकुट की जिम्मेदारी हो, मोरपंख की सादगी हो, और पीताम्बर की पवित्रता हो। जब हर बच्चा इन गुणों से सजेगा, तो यह केवल उसका नहीं, बल्कि पूरे समाज का सौंदर्य होगा।

साहित्य और सत्ता की तस्वीरें: रसूख, दिखावा और लेखन की गरिमा

लेखक की सबसे बड़ी पूँजी उसके शब्द और उसकी स्वतंत्रता है, न कि सत्ता से नज़दीकी की तस्वीरें। प्रभावशाली व्यक्तियों को मंच पर पुस्तक भेंट करने और उसकी तस्वीरें सोशल मीडिया पर प्रचारित करने से क्षणिक पहचान मिल सकती है, लेकिन इससे साहित्य की गरिमा कम होती है। सचमुच मूल्यवान किताब पाठकों के दिलों में जगह बनाती है, न कि नेताओं की अलमारियों में धूल खाती है। लेखक का असली सम्मान सत्ता के प्रमाणपत्र में नहीं, बल्कि पाठकों की स्वीकृति में है। इसलिए साहित्यकार को अपने शब्दों पर भरोसा करना चाहिए, न कि सत्ता की मुस्कान पर।

-डॉ. सत्यवान सौरभ

सोशल मीडिया के इस दौर में तस्वीरें केवल यादें नहीं, बल्कि संदेश भी होती हैं। फेसबुक, इंस्टाग्राम, व्हाट्सऐप और ट्विटर (अब एक्स) पर रोज़ाना सैकड़ों ऐसी तस्वीरें दिखाई देती हैं, जिनमें कोई लेखक या लेखिका मुख्यमंत्री, मंत्री, सत्तारूढ़ दल के नेता, किसी उच्चाधिकारी या किसी अन्य प्रभावशाली व्यक्ति को अपनी पुस्तक भेंट कर रहा होता है। इन तस्वीरों में अक्सर एक पैटर्न दिखता है—नेता या अधिकारी के चेहरे पर औपचारिक, हल्की-सी कारोबारी मुस्कान, कभी-कभी उकताहट या झल्लाहट भी, और लेखक के चेहरे पर उत्साह, विनम्रता और कृतज्ञता का मिश्रण। यह दृश्य जितना सरल लगता है, उतना ही जटिल है। सवाल यह नहीं कि किसी को पुस्तक भेंट करना सही है या ग़लत—यह तो लेखक का अधिकार है। सवाल यह है कि जब इस भेंट को मंच, मीडिया और प्रचार का रूप दिया जाता है, तब इसके पीछे असली उद्देश्य क्या होता है? क्या सचमुच उम्मीद है कि वह प्रभावशाली व्यक्ति पुस्तक पढ़ेगा? या फिर यह रस्म केवल निकटता, पहचान और संभावित लाभ बढ़ाने की रणनीति है?

साहित्य और सत्ता का रिश्ता नया नहीं है। इतिहास गवाह है कि कवि, लेखक और कलाकार सदियों से राजाओं, नवाबों, सामंतों और साम्राज्य के शक्तिशाली केंद्रों के करीब रहे हैं। मुग़ल दरबार के कवि, अकबर के नवरत्न, विक्रमादित्य के आश्रित कवि—यह सब उदाहरण हैं कि सत्ता और साहित्य का एक सहजीवी संबंध रहा है। अंतर बस इतना है कि तब यह संबंध खुला और स्पष्ट था। राजा या शासक कवि को संरक्षण देते थे, बदले में कवि दरबार की प्रशंसा में रचनाएँ लिखते थे। आज लोकतंत्र में संरक्षण का रूप बदल गया है—अब सरकारी पुरस्कार, संस्कृति परिषद् की समितियाँ, साहित्यिक यात्राएँ और संपादकीय बोर्ड नए दरबार हैं।

जब कोई लेखक प्रभावशाली व्यक्ति को पुस्तक भेंट करता है और उस क्षण की तस्वीर सोशल मीडिया पर डालता है, तो यह केवल यादगार लम्हा नहीं होता। यह एक प्रतीक होता है—एक संदेश, कि लेखक सत्ता के नज़दीक है। जनता के लिए यह संकेत होता है कि उसकी पहचान बड़े लोगों से है। सत्ता के लिए यह इशारा कि वह उनके दायरे में है, और साहित्यिक समाज के लिए यह घोषणा कि उसके पास ऐसे संपर्क हैं, जो औरों के पास नहीं। यह तस्वीर की राजनीति केवल लेखक की छवि बदलती है, बल्कि उसकी मंशा पर भी सवाल उठाती है।

इस प्रक्रिया में दोनों पक्षों का मनोविज्ञान भी दिलचस्प है। लेखक चाहता है कि उसका काम देखा जाए, सराहा जाए, और जहाँ संभव हो, पुरस्कार या सम्मान के रूप में मान्यता मिले। सत्ता के निकट होने से यह रास्ता छोटा लगता है। दूसरी ओर, नेता या अधिकारी को ऐसे अवसर पब्लिक रिलेशन के काम आते हैं। तस्वीर से यह संदेश जाता है कि वह साहित्य और संस्कृति प्रेमी हैं, भले ही पुस्तक का पहला पन्ना भी न पढ़ा गया हो। दुखद यह है कि दोनों पक्ष जानते हैं कि पुस्तक पढ़ी नहीं जाएगी, फिर भी यह नाटक चलता है—एक औपचारिक मुस्कान, एक झुकी हुई कृतज्ञता, और कैमरे की क्लिक।

अगर कोई लेखक निजी मुलाक़ात में, बिना प्रचार के, अपनी पुस्तक किसी को भेंट करता है—यह स्वाभाविक, सादगीभरा और सम्मानजनक कार्य है। इसमें कोई संदेह या आलोचना की गुंजाइश नहीं। समस्या तब शुरू होती है जब भेंट का मंच सजाया जाता है, समारोह का आयोजन किसी ऐसे सूत्र के माध्यम से होता है जो सत्ता के नज़दीक है, हर कोण से तस्वीरें ली जाती हैं और अगले ही घंटे सोशल मीडिया पर "पुस्तक भेंट" की पोस्ट डाल दी जाती है। इस पल से यह साहित्यिक घटना नहीं, बल्कि पब्लिक रिलेशन इवेंट बन जाती है।

यथार्थ यह है कि सत्ता से नज़दीकी कभी-कभी ठोस लाभ देती है—साहित्यिक पुरस्कारों में नामांकन और चयन, सांस्कृतिक कार्यक्रमों में विशेष आमंत्रण, सरकारी प्रकाशन या अनुदान, समितियों और बोर्डों में पद। इसलिए कुछ लेखक यह रास्ता अपनाते हैं—उन्हें लगता है कि अकेले लेखन की ताक़त से वहाँ पहुँचना कठिन है, जबकि सत्ता के दरबार में उपस्थिति से रास्ता आसान हो सकता है।

लेकिन यहाँ एक गंभीर नैतिक प्रश्न उठता है—लेखक की स्वतंत्रता का क्या होगा? साहित्य की सबसे बड़ी पूँजी उसकी स्वतंत्रता है। जब लेखक सत्ता के करीब जाने को प्राथमिकता देता है, तो यह स्वतंत्रता कमज़ोर पड़ जाती है। सत्ता की कृपा पाने की चाहत अक्सर आलोचना की धार को कुंद कर देती है। जो लेखक पहले व्यवस्था पर सवाल उठाता था, वह अब सावधानी से शब्द चुनने लगता है, ताकि कहीं दरबार नाराज़ न हो जाए। यह स्थिति न केवल लेखक को, बल्कि साहित्य को भी कमजोर करती है। क्योंकि साहित्य का असली काम है—समाज का आईना बनना, सच कहना और सत्ता से सवाल करना।

इतिहास बार-बार हमें यह सिखाता है कि साहित्य की उम्र सत्ता से लंबी होती है। तुलसीदास ने अपनी रचनाएँ मुग़लों और राजाओं के दरबार में जाकर नहीं, बल्कि समाज में रहकर लिखीं। प्रेमचंद ने सत्ता से टकराने का जोखिम लिया, इसलिए उनके शब्द आज भी ज़िंदा हैं। दूसरी ओर, ऐसे भी कवि रहे जिन्होंने केवल राजा की प्रशंसा में काव्य लिखा—उनका नाम और कृति, दोनों समय की धूल में दब गए। साहित्यकार की असली ताक़त उसके शब्दों की ईमानदारी में है, न कि उसके संपर्कों में।

हर लेखक का पहला और आख़िरी फ़र्ज़ पाठकों के प्रति है। पुस्तक छपने के बाद उसका जीवन पाठकों के हाथों में होता है, न कि नेताओं की अलमारियों में। अगर पुस्तक सचमुच मूल्यवान है, तो उसे प्रचार की ज़रूरत नहीं, पाठक ही उसे आगे बढ़ाएँगे। अगर पुस्तक केवल सत्ता के दरबार में भेंट होने के लिए है, तो वह वहीं धूल खाएगी और लेखक की पहचान भी उतनी ही सतही रह जाएगी। लेखक को चाहिए कि वह अपने लेखन का सम्मान बनाए रखे, पुस्तक भेंट निजी स्तर पर करे, बिना कैमरे और प्रचार के। सत्ता के साथ संबंध साहित्यिक चर्चा पर आधारित हों, न कि पब्लिक रिलेशन पर। उसकी छवि पाठकों के बीच बने, न कि सत्ता के करीब।

एक तस्वीर एक दिन में वायरल हो सकती है, लेकिन एक अच्छी किताब सदियों तक पढ़ी जाती है। सत्ता से निकटता क्षणिक लाभ दे सकती है, लेकिन साहित्य की ताक़त दीर्घकालिक होती है। अगर लेखक सचमुच अपने शब्दों पर विश्वास रखता है, तो उसे अपना मूल्य नेताओं की मुस्कान से नहीं, पाठकों की आँखों से मापना चाहिए। आज ज़रूरत है ऐसे साहित्यकारों की, जो सत्ता से स्वतंत्र रहकर लिखें—चाहे इसके लिए उन्हें मंच पर पुस्तक भेंट करने वाली तस्वीरों की चमक छोड़नी पड़े।

देश के 79 वां स्वतंत्रता दिवस पर भारत के बच्चों की देश भक्ति के रंग

यहां नन्हे मुन्ने नव निहाल
अपनी भारत की संतान
इन्हें देखकर कर होता है हमें गुमान
यहां सब है भारत माता की संतान।

79 वां स्वतंत्रता दिवस पर देश भर के बच्चों में अपने देश के प्रति जागरूकता के साथ उंमगता व उल्लास देखकर लगता है। जैसे स्वतंत्रता सेनानी व भारत माता पर कुर्बान उन असंख्य वीरों की शहादत बेकार नहीं गई। क्योंकि अब बागडोर भविष्य में इन्हीं के हाथों में आने वाली है।

तभी तो आज उन्हीं कुछ भारत के बच्चों की तस्वीरें सभी पाठकों तक उसी परिदृश्य को आप के बीच पहुंचाया गया है।

प्रेषक - फोटो व स्वतंत्र लेखक हरिहर सिंह चौहान जबरी बाग़ नसिया इन्दौर

चुनाव आयोग नहीं, जनादेश का अपमान हो रहा है

राजेश कुमार पासी

इंडिया गठबंधन के नेताओं ने 11 अगस्त को संसद से लेकर चुनाव आयोग मुख्यालय तक विरोध मार्च निकालकर हंगामा किया जबकि चुनाव आयोग ने 30 नेताओं को अपनी बात रखने के लिए बुलाया था। वास्तव में विपक्ष यह दिखाना चाहता था कि उसके विरोध को दबाया जा रहा है, इसलिए ऐसा हंगामा किया गया कि पुलिस को उनकी गिरफ्तारियां करनी पड़ी। विदेशी समाचार पत्रों में यह खबर प्रमुखता के साथ प्रकाशित की गई कि भारत में विपक्ष को चुनावी धांधलियों के खिलाफ आवाज उठाने से रोका जा रहा है। इस पर कई विदेशी समाचार पत्रों द्वारा लेख प्रकाशित करके बताया जा रहा है कि भारत में लोकतंत्र का गला घोंटा जा रहा है। बिहार में मतदाता सूची के गहन पुनरीक्षण के कार्यक्रम पर विपक्ष द्वारा खड़े किये जा रहे विवाद के कारण विदेशी समाचार पत्रों द्वारा इस पारदर्शी प्रक्रिया को विवादास्पद बताया जा रहा है।

राहुल गांधी ने 7 अगस्त को दिल्ली में एक प्रेस कांफ्रेंस करके चुनाव आयोग पर भाजपा से मिलीभगत का आरोप लगाया है। उनका कहना है कि कर्नाटक में कांग्रेस को 16 सीटें मिलने की उम्मीद थी लेकिन वो केवल 9 सीटें ही जीत पाई। उनका आरोप है कि ऐसा केवल वोट चोरी से हो सकता है इसलिए वो इसे चुनाव चोरी कहते हैं। राहुल गांधी चुनाव आयोग के कर्मचारियों को धमकी देते हुए कहते हैं कि जब उनकी सरकार आएगी तो उनको इसका परिणाम भुगतना होगा। चुनाव आयोग ने राहुल गांधी को अपने आरोपों पर शपथ पत्र देने का कहा है ताकि वो मामले की जांच कर सके। राहुल गांधी कहते हैं कि वो शपथपत्र नहीं देंगे, उनका बयान ही शपथ पत्र माना जाए। सबसे अजीब बात यह है कि एक तरफ राहुल गांधी मतदाता सूची में फर्जी लोगों का नाम जोड़ने का आरोप लगाते हैं तो दूसरी तरफ बिहार में मतदाता सूची में फर्जी, अयोग्य और मृत लोगों के नाम हटाये जाने का विरोध कर रहे हैं।

राहुल गांधी एक ऐसे व्यक्ति हैं जो बीमारी का ढिंढोरा पीट रहे हैं लेकिन बीमारी के इलाज का विरोध कर रहे हैं। उन्होंने 7 अगस्त को अपनी प्रेस कांफ्रेंस में जो खुलासा किया है, वो वास्तव में कोई खुलासा है ही नहीं बल्कि एक ऐसा सच है जो इस देश का हर व्यक्ति जानता है। सबको पता है कि मतदाता सूची में मृतकों और अयोग्य लोगों के नाम दर्ज हैं। इसके अलावा ऐसे लोग भी हैं जिन्होंने अपने नाम कई जगहों पर दर्ज करवाए हुए हैं। राहुल गांधी ने कहा है कि बैंगलुरू सैंट्रल निर्वाचन क्षेत्र में एक लाख से ज्यादा मतदाता चुपके से जोड़ दिए गए हैं। सवाल यह है कि नये वोटर जोड़ना कैसे गलत है लेकिन राहुल गांधी इन विसंगतियों को लेकर खुद ही नतीजे पर पहुंच गए हैं कि यह सब भाजपा ने अपने फायदे के लिए किया है। कांग्रेस की कर्नाटक सरकार के मंत्री राजन्ना ने इस मामले पर अपनी ही पार्टी और सरकार को घेर लिया है। उन्होंने कहा कि मतदाता सूची में संशोधन हमारी सरकार के दौरान ही हुआ है और यह काम कर्नाटक सरकार में काम करने वाले अधिकारियों और कर्मचारियों द्वारा किया गया है। एक आदिवासी मंत्री राजन्ना को इसलिए बर्खास्त कर दिया गया क्योंकि उन्होंने राहुल गांधी के झूठ की पोल खोल दी।

सबसे बड़ा सवाल यही है कि कांग्रेस सरकार के शासन में, उसके ही कर्मचारियों और अधिकारियों ने मतदाता सूची में भाजपा के लिए हेराफेरी कैसे कर दी। राहुल गांधी चुनाव आयोग के कर्मचारियों को धमकी दे रहे हैं कि उनकी सरकार आएगी तो वो कार्यवाही करेंगे। अब सवाल उठता है कि कर्नाटक में तो उनकी सरकार है तो कार्यवाही क्यों नहीं की गई है। क्या वो यह कहना चाहते हैं कि केंद्र में कांग्रेस की सरकार आएगी तो वो कर्नाटक के कर्मचारियों को दंड देंगे। कानूनन किसी भी दल को मतदान प्रक्रिया या मतदाता सूची में गड़बड़ी पाए जाने पर नतीजों के 45 दिनों के अंदर अपनी शिकायत दर्ज करवानी होती है लेकिन राहुल गांधी और उनकी पार्टी ऐसा नहीं कर सकी।

राहुल गांधी ने अपनी प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान कहा कि कई ऐसे पते हैं जिन पर वहां रहने वाले लोगों की संख्या के मुकाबले कहीं ज्यादा मतदाता दर्ज हैं। यह भी एक आम समस्या है क्योंकि भारत में लगभग 40 करोड़ प्रवासी हैं जो अपना निवास स्थान जल्दी-जल्दी बदलते रहते हैं। वो उस घर के पते का इस्तेमाल करते हैं जो उन्हें ऐसा करने की इजाजत देता है। इसके कारण कई घरों में रहने वाले लोगों से कहीं ज्यादा मतदाता दर्ज हो जाते हैं। दूसरी बात यह है कि ऐसे लोग कई बार कई जगहों पर मतदाता बन जाते हैं और उनके कई वोटर कार्ड भी बन जाते हैं। इन विसंगतियों को तो बिहार में चुनाव आयोग ठीक कर रहा है और अब पूरे देश में इसे ठीक करने की मुहिम शुरु होने वाली है। अजीब बात यह है कि पूरा विपक्ष इसका विरोध कर रहा है।

वास्तव में राहुल गांधी और दूसरे विपक्षी नेता चुनाव आयोग के खिलाफ अभियान नहीं चला रहे हैं बल्कि वो भाजपा के खिलाफ राजनीति कर रहे हैं। चुनाव आयोग एक संवैधानिक संस्था है और उसे सारी शक्तियां संविधान से मिलती हैं। चुनाव आयोग सरकार के अधीन नहीं है बल्कि स्वतंत्र तरीके से अपना काम करता है। चुनाव आयोग का काम केन्द्र और राज्य सरकार के अधिकारी और कर्मचारी करते हैं। यह आरोप लगा देना सही नहीं है कि चुनाव आयोग किसी विशेष दल के लिए हेराफेरी कर रहा है। आरोप लगाना तब सही है जब आपके पास उसको साबित करने के लिए पक्के सबूत हों लेकिन सबूत के नाम पर विपक्ष के पास कुछ नहीं है। मतदाता सूची में विसंगतियां हैं इसलिए तो चुनाव आयोग गहन पुनरीक्षण कर रहा है। मतदाता सूची में विसंगतियां दिखा कर यह साबित नहीं किया जा सकता कि इससे किसी पार्टी को फायदा पहुंचाया गया है। अगर फर्जी वोटिंग हुई है तो किसके पक्ष में हुई है, उसे भी साबित करने की जरूरत है। सिर्फ विसंगतियों के आधार पर यह कह देना कि इससे भाजपा को फायदा हुआ है, पूरी तरह से गलत है। अगर भाजपा कहती है कि इससे कांग्रेस को फायदा हुआ है तो राहुल गांधी क्या जवाब देंगे। मतदाता सूची में जिन विसंगतियों का खुलासा राहुल गांधी ने किया था, वैसी ही विसंगतियों को भाजपा ने कांग्रेस नेताओं द्वारा जीती हुई सीटों पर ढूंढ निकाला है। क्या अब राहुल गांधी यह कहेंगे कि यह विसंगतियां कांग्रेस के नेताओं ने चुनाव जीतने के लिए करवाई थी। इस तरह देखा जाए तो कांग्रेस ने भी चुनाव की चोरी की है।

वास्तव में राहुल गांधी का निशाना चुनाव आयोग नहीं बल्कि मोदी सरकार है। राहुल गांधी को अब अहसास हो गया है कि वो मोदी से जीत नहीं सकते, इसलिए उनकी जीत को संदिग्ध बना रहे हैं। वो यह साबित करना चाहते हैं कि मोदी सरकार को जनता वोट नहीं दे रही है बल्कि भाजपा वोट चोरी करके सरकार बना रही है। इस तरह राहुल गांधी मोदी सरकार को मिले जनादेश का अपमान कर रहे हैं। उन्होंने कहा भी है कि हर सरकार के खिलाफ सत्ता विरोधी लहर होती है लेकिन मोदी सरकार के खिलाफ सत्ता विरोधी लहर नहीं होती है। उन्हें मोदी सरकार का बार-बार चुनाव जीतना संदिग्ध लग रहा है इसलिए वो कह रहे हैं कि भाजपा चुनाव चोरी करके सरकार बना रही है। वो भूल गए हैं कि आजादी के बाद 55 साल तक कांग्रेस ने राज किया है। क्या वो कहना चाहते हैं कि नेहरू जी और इंदिरा जी बार-बार चुनाव इसलिए जीत रहे थे क्योंकि वो चुनाव चोरी कर रहे थे। क्या मनमोहन सिंह सरकार दोबारा चुनाव चोरी करके बनी थी।

राहुल गांधी इस देश की जनता का अपमान कर रहे हैं, संविधान और लोकतंत्र का मजाक बना रहे हैं। इस देश का मतदाता बहुत समझदार है, वो सरकार को तब तक नहीं बदलता जब तक कि उसका अच्छा विकल्प उसके सामने न हो। 1977 तक देश की जनता ने सिर्फ कांग्रेस को चुना लेकिन आपातकाल के कारण पहली बार विपक्ष को सरकार बनाने का मौका दिया। जब विपक्ष ने अच्छा काम नहीं किया तो जनता ने कांग्रेस को दोबारा मौका दिया। ऐसे ही 2009 में मनमोहन सिंह सरकार को दोबारा इसलिए मौका मिला क्योंकि जनता के सामने अच्छा विकल्प नहीं था। 2014 में जनता को मोदी के रूप में एक विश्वसनीय चेहरा मिला तो सरकार बदल दी। 2019 और 2024 में जनता को विपक्ष में मोदी का विकल्प नहीं दिखा तो उसने मोदी को दोबारा मौका दिया। जिस तरह हमारा विपक्ष चल रहा है उससे लगता है कि 2029 में भी उसे मौका मिलने वाला नहीं है।

विडम्बना है कि पूरा विपक्ष राहुल गांधी के पीछे चल रहा है और राहुल गांधी को पता नहीं है कि वो कहाँ जा रहे हैं। जनादेश का अपमान करना विपक्ष को बहुत भारी पड़ने वाला है क्योंकि ये जनता का अपमान है। विपक्ष को अपनी हार का बहाना ढूंढने की जगह आत्मविश्लेषण करने की जरूरत है। उसे गंभीरता से यह विचार करने की जरूरत है कि जनता बार-बार मोदी सरकार को मौका क्यों दे रही है। जनता की समझ पर सवाल खड़े करना विपक्ष के लिए सही नहीं है।

श्रीकृष्ण के छह अमर प्रतीक : जहाँ प्रेम, धर्म और शौर्य एक साथ बोलते हैं

उमेश कुमार साहू

जब बालकृष्ण ने नंदबाबा के आंगन में पहली बार कदम रखा, तब किसी को अनुमान न था कि यह बालक एक ऐसा विराट व्यक्तित्व बनेगा, जो युगों-युगों तक धर्म, प्रेम और पराक्रम का प्रतीक रहेगा। श्रीकृष्ण के जीवन की यात्रा केवल लीलाओं की कथा नहीं, अपितु प्रतीकों का भी महाग्रंथ है। जीवन के विभिन्न चरणों में उन्हें छह ऐसे दिव्य उपहार मिले, जो उनके व्यक्तित्व का पर्याय बन गए और जिनके पीछे छिपा है एक गहरा आध्यात्मिक और दार्शनिक अर्थ।

1. बांसुरी : संगीत की आत्मा, प्रेम की भाषा

कृष्ण और बांसुरी का संबंध केवल एक वाद्य यंत्र तक सीमित नहीं है। यह प्रेम की शुद्धतम ध्वनि है, जो आत्मा को छू लेती है। कहते हैं, नंदबाबा ने बालकृष्ण को बांसुरी दी थी जब वे मात्र तीन-चार वर्ष के थे। यह बांसुरी, कालांतर में राधा के प्रेम, गोपियों की समर्पण भावना और ब्रह्माण्ड के संगीत की अभिव्यक्ति बन गई। कृष्ण की बांसुरी से निकली तान केवल कानों को नहीं, आत्मा को झंकृत करती है।

दर्शनः बांसुरी हमें सिखाती है कि सबसे मधुर संगीत तभी निकलता है जब हम स्वयं को खो देते हैं। यह प्रतीक है अहंकार-शून्यता और प्रेम की शाश्वतता का।

2. वैजयंती माला : विजय की नहीं, विनय की माला

वैजयंती माला, जिसे श्रीकृष्ण ने सदैव धारण किया, राधा रानी का प्रथम उपहार मानी जाती है। यह माला केवल विजयों का प्रतीक नहीं, बल्कि आत्मसमर्पण, मित्रता और श्रद्धा का प्रतीक भी है। यह माला उन्हें रासलीला से पूर्व राधा ने पहनाई थी और इसके पीछे छिपा था स्त्रीत्व का सम्मान, और भावनाओं का आदान-प्रदान।

दर्शन : यह माला दर्शाती है कि सच्ची विजय केवल युद्धों में नहीं, प्रेम में, सम्मान में, और समर्पण में भी होती है।

3. मोरपंख : सौंदर्य, सजगता और सहजता का प्रतीक

कृष्ण के मुकुट पर सजे मोरपंख का सौंदर्य जितना बाह्य है, उतना ही भीतर भी। वृंदावन में जब कृष्ण आठ-दस वर्ष के थे, तब पहली बार राधा ने उन्हें यह मोरपंख सजाया था। यह पंख केवल एक आभूषण नहीं, बल्कि एक संदेश था - सौंदर्य में अहंकार नहीं, सरलता होनी चाहिए।

दर्शन : मोरपंख श्रीकृष्ण के जीवन में सौंदर्य और सहजता का अद्भुत संगम है। यह प्रकृति से जुड़े रहने की प्रेरणा भी देता है।

4. अजितजय धनुष और पांचजन्य शंख : धर्म की पुकार

गुरु संदीपनि के आश्रम में जब श्रीकृष्ण शिक्षा ग्रहण कर रहे थे, तब उन्हें शंखासुर से युद्ध में अजितजय धनुष और पांचजन्य शंख प्राप्त हुआ। शंख, युद्ध की पुकार से अधिक, धर्म और न्याय का उद्घोष है। जब भी अधर्म बढ़ा, कृष्ण ने इस शंख की ध्वनि से चेतावनी दी।

दर्शन : यह शंख और धनुष दर्शाते हैं कि प्रेमी हृदय भी आवश्यक होने पर योद्धा बन सकता है। धर्म की रक्षा के लिए कर्म करना ही सच्चा योग है।

5. सुदर्शन चक्र : समय और न्याय का अमोघ अस्त्र

सुदर्शन चक्र श्रीकृष्ण को परशुराम से प्राप्त हुआ, जब वे तेरह वर्ष के थे। यह वही चक्र था जो भगवान शिव ने त्रिपुरासुर वध के लिए बनाया था और विष्णु को प्रदान किया था। सुदर्शन केवल एक अस्त्र नहीं, न्याय का चक्र है, जो अधर्म को नष्ट करता है और धर्म की स्थापना करता है।

दर्शन : सुदर्शन चक्र श्रीकृष्ण के कर्मयोग का प्रतीक है - बिना मोह के, न्याय के लिए कठोर निर्णय लेना।

6. श्रीकृष्ण स्वयं : उपहारों से महान, पर उपहारों में भी ईश्वर

इन छह उपहारों ने श्रीकृष्ण के व्यक्तित्व को सजाया, लेकिन इन उपहारों की महिमा स्वयं कृष्ण के कारण है। यह श्रीकृष्ण की करुणा, प्रेम, धैर्य, विवेक और शक्ति है, जिसने इन प्रतीकों को अमर बना दिया।

श्रीकृष्ण के जीवन के ये छह प्रतीक हमें केवल पौराणिक कथा नहीं सुनाते, बल्कि आज के जीवन में भी प्रासंगिक शिक्षाएं देते हैं - जब बोलना हो, तो बांसुरी की तरह मधुर बोलें; जब संघर्ष हो, तो शंखनाद करें; जब निर्णय लेना हो, तो सुदर्शन की तरह स्पष्ट और न्यायप्रिय रहें।

इन दिव्य उपहारों ने श्रीकृष्ण को नहीं बल्कि श्रीकृष्ण ने इन्हें दिव्यता दी और यही है उस अवतारी पुरुष की सबसे बड़ी लीला सामान्य को असाधारण बना देना।

श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के 350वें गुरुआई दिवस पर महान नगर कीर्तन 21 अगस्त को

अमृतसर। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी (एस.जी.पी.सी.) धर्म प्रचार कमेटी, श्री अमृतसर साहिब, के अध्यक्ष एडवोकेट हरजिंदर सिंह ने जानकारी दी कि श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के 350 वर्षीय गुरुआई दिवस तथा श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी, भाई दिया जी, भाई सतीदास जी और भाई मतीदास जी के 350 वर्षीय शहीदी दिवस की स्मृति में एक महान नगर कीर्तन आयोजित किया जा रहा है। यह नगर कीर्तन 6 भादों, नानकशाही संवत 557 (21 अगस्त 2025, गुरुवार) को प्रातः 10:00 बजे गुरुद्वारा श्री गुरु तेग बहादर साहिब, धोबड़ी साहिब (आसाम) से आरंभ होकर तख़्त श्री केसगढ़ साहिब, श्री आनंदपुर साहिब (रोपड़), पंजाब में संपन्न होगा। एडवोकेट हरजिंदर सिंह ने कहा कि ऐसे पंथक कार्यों की सफलता सभी सिख संप्रदायों, निहंग सिंह जत्थेबंदियों, सिंह सभाओं, कार-सेवा करने वाले महापुरुषों तथा समाजसेवी संस्थाओं के सहयोग से ही संभव है। उन्होंने गुरु नानक नाम-लेवा संगत से अपील की कि वे इस धार्मिक कार्यक्रम में उत्साहपूर्वक सम्मिलित हों और अपने नगर के गुरुद्वारा साहिब में संगत को प्रेरित करें।

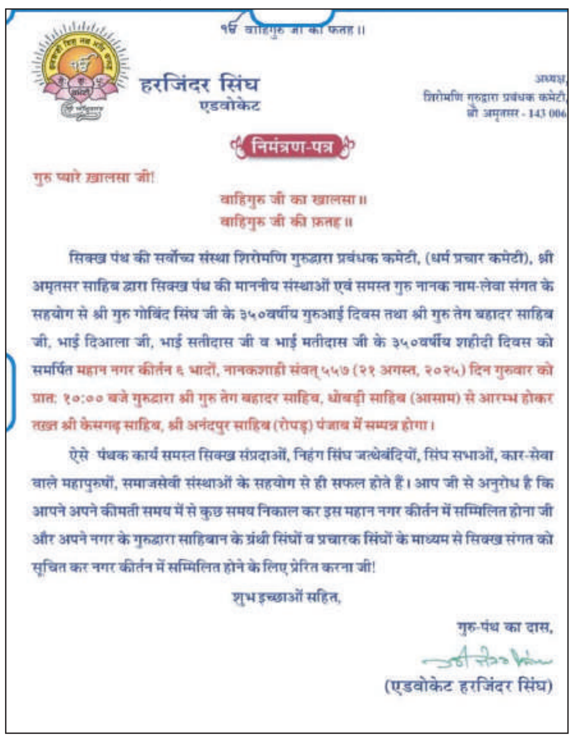

हरजिंदर सिंह
एडवोकेट

अध्यक्ष,
शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी,
श्री अमृतसर - 143 006

निमंत्रण-पत्र

गुरु प्यारे ख़ालसा जी!

वाहिगुरु जी का खालसा॥
वाहिगुरु जी की फ़तह॥

सिक्ख पंथ की सर्वोच्च संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, (धर्म प्रचार कमेटी), श्री अमृतसर साहिब द्वारा सिक्ख पंथ की माननीय संस्थाओं एवं समस्त गुरु नानक नाम-लेवा संगत के सहयोग से श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के ३५०वर्षीय गुरुआई दिवस तथा श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी, भाई दिआला जी, भाई सतीदास जी व भाई मतीदास जी के ३५०वर्षीय शहीदी दिवस को समर्पित महान नगर कीर्तन ६ भादों, नानकशाही संवत् ५५७ (२१ अगस्त, २०२५) दिन गुरुवार को प्रातः १०:०० बजे गुरुद्वारा श्री गुरु तेग बहादर साहिब, धोबड़ी साहिब (आसाम) से आरम्भ होकर तख़्त श्री केसगढ़ साहिब, श्री अनंदपुर साहिब (रोपड़) पंजाब में सम्पन्न होगा।

ऐसे पंथक कार्य समस्त सिक्ख संप्रदाओं, निहंग सिंघ जत्थेबंदियों, सिंघ सभाओं, कार-सेवा वाले महापुरुषों, समाजसेवी संस्थाओं के सहयोग से ही सफल होते हैं। आप जी से अनुरोध है कि आपने अपने कीमती समय में से कुछ समय निकाल कर इस महान नगर कीर्तन में सम्मिलित होना जी और अपने नगर के गुरुद्वारा साहिबान के ग्रंथी सिंघों व प्रचारक सिंघों के माध्यम से सिक्ख संगत को सूचित कर नगर कीर्तन में सम्मिलित होने के लिए प्रेरित करना जी!

शुभ इच्छाओं सहित,

गुरु-पंथ का दास,

(एडवोकेट हरजिंदर सिंघ)

कोरेमुला स्थित श्री आईमाता जी मंदिर में स्वतंत्र दिवस के पावन अवसर पर आयोजित ध्वजा रोहण कार्यक्रम में उपस्थित संरक्षक प्रभुराम परिहारीया, अध्यक्ष कालुराम काग, सचिव डायाराम लचेटा, सह सचिव राजूराम राम गेहलोत, उपाध्यक्ष राजाराम पंवार, प्रकाश खंडाला मोतीलाल भायल, ताराराम परिहारिया, छोगाराम गेहलोत, बाबूलाल काग, भीकाराम पंवार ओमप्रकाश सीन्दड़ा, दलाराम सोयल, रामलाल राठौड़ कमल किशोर व समाज बन्धु उपस्थित रहे।

रामपल्ली स्वतंत्र दिवस के पावन अवसर पर आयोजित ध्वजा रोहण कार्यक्रम में उपस्थित बौदूलाल शर्मा, विकास शर्मा, आनंद कुमार शर्मा, इंदरपाल सैनी, गौरव सैनी, शुभम शर्मा, रेखा शर्मा, कांता देवी, आदित्य शर्मा, आलोक शर्मा, व समाज बन्धु उपस्थित रहे।

सीरवी समाज की नई कार्यकारिणी गठित

जगदीश सीरवी

हैदराबाद। जीडिमेटला स्थित श्री आईमाता मंदिर भवन में सीरवी समाज जीडिमेटला के आगामी कार्यकाल हेतु नई कार्यकारिणी का सर्व सम्मति से 6 पदाधिकारी एवं 19 एरिया सदस्य का सीरवी समाज जीडिमेटला द्वारा नियुक्त हुए।

आज यहाँ जारी प्रेस विज्ञप्ति में सचिव नारायणलाल बर्फा, प्रेम पंवार ने बताया कि सीरवी समाज जीडिमेटला की नई कार्यकारिणी का गठन सर्वसम्मति से किया गया। चनुाव अधिकारी की जिम्मेदारी अशोक हाम्बड़ एवं जगदीश सोलंकी ने निभायी। सर्वप्रथम आईमाता मंदिर पूजा-अर्चनाकर किए गए। तत्पश्चात सर्वसम्मति से चुने गए पदाधिकारियों में नवनिर्वाचित अध्यक्ष रावतराम बर्फा, उपाध्यक्ष 1 सोहनलाल परिहार, उपाध्यक्ष 2 दुर्गाराम मुलेवा, सचिव प्रेम पंवार, सहसचिव मंगलराम पंवार, कोषाध्यक्ष भंवरलाल काग शामिल हैं। पदाधिकारी एवं एरिया सदस्य का विशेष सम्मान किया गया।

नवनिर्वाचित कमेटी ने आभार व्यक्त किया। अध्यक्ष रावतराम बर्फा ने चुनाव प्रक्रिया में समाज बंधुओं द्वारा शांतिपूर्ण तरीके से सहयोग करने के लिए आभार जताया। मंच संचालन करते हुए सचिव नारायणलाल बर्फा ने बताया कि आगामी कार्यकाल के लिए नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को भादवा सुदी दूज, 25 अगस्त को पद व गोपनीयता की शपथ दिलायी जायेगी। अध्यक्ष मांगीलाल काग सचिव नारायणलाल बर्फा, ने नवनिर्वाचित अध्यक्षों एवं चुनाव अधिकारियों को शांतिपूर्ण तरीके से चुनाव कराने पर शुभकामनाएँ दीं। कार्यक्रम का विशेष कवरेज पत्रकार जगदीश सीरवी ने किया। पधारे हुए समस्त समाज बंधुओं का अध्यक्ष मांगीलाल काग ने धन्यवाद ज्ञापन से कार्यक्रम का समापन हुआ।

भारत का सबसे बड़ा विमान मरम्मत केंद्र भुवनेश्वर में स्थापित किया जाएगा

मनोरंजन सासमल, बरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर : बीजू पटनायक अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर भारत का सबसे बड़ा रखरखाव, मरम्मत और ओवरहाल (एमआरओ) केंद्र स्थापित होने वाला है, जो ओडिशा की अर्थव्यवस्था और रोज़गार को बढ़ावा देने में अहम भूमिका निभाएगा। राज्य मंत्रिमंडल ने इस प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है और देश की सबसे पुरानी और सबसे बड़ी एमआरओ सेवा प्रदाता कंपनी, एयर वर्क्स इंडिया (इंजीनियरिंग) प्राइवेट लिमिटेड को इस परियोजना के लिए निवेशक नियुक्त किया गया है। मुख्य सचिव मनोज आहूजा के अनुसार, वर्तमान में एयरलाइंस अपने राजस्व का 12-15% विमानों की मरम्मत और रखरखाव पर खर्च करती हैं, जो ज़्यादातर दूसरे राज्यों या विदेशों में किया जाता है। यह एमआरओ केंद्र इस खर्च को ओडिशा के भीतर ही सीमित रखकर राज्य के औद्योगिक विकास में मदद करेगा। यह पूर्वी भारत के विमानन और औद्योगिक विकास के लिए एक मील का पत्थर साबित होगा। हवाई अड्डा निदेशक प्रसन्ना प्रधान के अनुसार, इस केंद्र के चालू होने के बाद, ओडिशा से घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय उड़ानें संचालित होंगी, जिससे राज्य में विमानन से जुड़े उद्योगों की माँग बढ़ेगी। नीति आयोग के अनुसार, वैश्विक एमआरओ बाज़ार में भारत की हिस्सेदारी 2031 तक 117 अरब डॉलर तक पहुँचने की उम्मीद है। यह परियोजना बी-मैन (विमानन संपत्तियों और नेटवर्क का निर्माण और प्रबंधन) योजना का हिस्सा होगी और औद्योगिक नीति प्रस्ताव 2022 के तहत निवेशकों को आकर्षित करने के लिए विशेष प्रोत्साहन प्रदान किए जाएँगे। इससे ओडिशा में रोज़गार के अवसर पैदा होंगे और राज्य एक प्रमुख विमानन केंद्र के रूप में स्थापित होगा।

किसरा स्थित कुमावत समाज सिकंदराबाद किसरा में स्वतंत्र दिवस के पावन अवसर पर आयोजित ध्वजा रोहण कार्यक्रम में उपस्थित कुमावत समाज तेलंगाना प्रदेश अध्यक्ष तिलायचा सोनाराम कुमावत, कुमावत समाज किसरा अध्यक्ष पप्पुराम बाकरेचा, बुधाराम, धर्माराम, सोहनलाल व समाज बन्धु उपस्थित रहे।

इस तरह से पढ़ाई चल रही है ओड़िशा की मयूरभंज ज़िले में

मनोरंजन सासमल, बरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर : ओड़िशा मे पढ़ाई की स्तीती गंभीर। कक्षा में एक ब्लैकबोर्ड। एक तरफ एक उड़िया शिक्षक पढ़ा रहे हैं, तो दूसरी तरफ एक गणित शिक्षक। एक ही कक्षा में दो शिक्षकों का एक साथ पढ़ाना, बेहतर शिक्षा व्यवस्था का मज़ाक उड़ाता है। ऐसा ही एक नज़ारा मयूरभंज ज़िले के बामनघाटी उप-ज़िले के एक स्कूल में देखने को मिला। यह प्राथमिक विद्यालय बामनघाटी उप-विभागीय कार्यालय से 35 किलोमीटर दूर, रायरंगपुर ब्लॉक के अंतर्गत गुहलडांगी पंचायत के डांगपानी में स्थित है। 1967 में स्थापित, इस स्कूल में आवश्यक कक्षाएँ नहीं हैं। पहले बने भवन अब ध्वस्त हो चुके हैं। चार साल पहले बने कक्षा-कक्ष से बारिश के दिनों में पानी रिसता है क्योंकि छत का प्लास्टर गिर गया है। वर्तमान में, स्कूल में तीन शिक्षक और दो कक्षाएँ हैं। नर्सरी से तीसरी कक्षा तक के बच्चे एक कमरे में बैठते हैं, जबकि चौथी और पाँचवीं कक्षा के छात्र दूसरे छोटे कमरे में पढ़ते हैं। हालांकि, बारिश के दौरान पानी के रिसाव के कारण, सभी कक्षाओं के 50 से अधिक छात्र एक कमरे में बैठने को मजबूर हैं। यह एक कमरे में पढ़ाई के तरीके से स्पष्ट है। दो दिन पहले, जब 'संबाद' संवाददाता समाचार एकत्र करने गया, तो एक अलग ही दृश्य देखने को मिला। एक शिक्षक एक कक्षा में ओडिया पढ़ा रहे थे, जबकि एक गणित शिक्षक दूसरे में पढ़ा रहे थे। इस संबंध में जब मैंने रायरंगपुर प्रखंड के जूनियर इंजीनियर तपस कुमार दास से संपर्क किया तो उन्होंने बताया कि स्कूल में एक नया क्लासरूम बनाने का प्रस्ताव है। उन्होंने बताया कि अगर सरकार आदेश देगी तो निर्माण कार्य कराया जाएगा।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023